Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

وَذَرِ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَهُمْ لَعِبًا وَّلَهْوًا وَّغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا

(सूरत ईनाम : 71)

अनुवाद : और तू उन लोगों को छोड़ दे जिन्होंने अपने दीन को खेल-कूद और स्वयं की इच्छाओं को पूरा करने का माध्यम बना रखा है और उन्हें दुनिया की ज़िंदगी ने धोखे में लगा दिया है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 7
अंक- 30

मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

28 ज़ुल्हज्जा 1443 हिज्री कमरी, 28 वफ़ा 1401 हिज्री शम्सी, 28 जुलाई 2022 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

रिज़्क़ में वृद्धि और लम्बी आयु का नुस्ख़ा

(2067) हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है,उन्होंने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना : जिसकी यह पसंद हो कि उसके रिज़्क़ में वृद्धि हो (और नेकियों का ज़्यादा से ज़्यादा उसे अवसर मिले) और उसकी आयु लम्बी हो तो चाहिए कि वह सिला-ए-रहिमी (अच्छा व्यवहार) करे।

व्याख्या : इस हदीस की व्याख्या में हज़रत सय्यद ज़ैनुल आबेदीन वलीउल्लाह शाह साहब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं : सिला-ए-रहिमी जैसा अहम फ़र्ज़ भी बग़ैर माल अदा नहीं हो सकता। इस बारे में क़ुरआन-ए-मजीद का उसूली इरशाद यह है वे लोग जो अल्लाह के (साथ किए हुए) अह्द को पूरा करते हैं और वादे को नहीं तोड़ते और वे लोग जो उसे जोड़ते हैं जिसे जोड़ने का अल्लाह ने हुक्म दिया ... यही वे लोग हैं जिन के लिए (आख़रत के) घर का (बेहतरीन) अंजाम है (राद : 21 से 23) तथा इसी सम्बन्ध में सूरत बकरः की यह आयत भी देखिए जिन में सम्बन्ध विच्छेद करने वाले को फ़ासिक़ और घाटा पाने वाले क़रार दिया गया है। आयात यह हैं : और वे इसके माध्यम से फ़ासिक़ों के सिवा किसी को गुमराह नहीं ठहराता। अर्थात वे लोग जो अल्लाह के अह्द को, उसे मज़बूती से बाँधने के बाद तोड़ देते हैं और (ताल्लुक़ात) को काट देते हैं जिनको जोड़ने का अल्लाह ने हुक्म दिया है और ज़मीन में फ़साद करते हैं यही वे लोग हैं जो घाटा पाने वाले हैं। (अल् बकरः : 27 - 28)

(सही बुख़ारी, भाग 4 किताबुल बीयू, मुद्रित 2008 क़ादियान) ★ ★ ★

यह तर्तीब भी क़ुरआन-ए-करीम के कलाम-ए-इलाही होने का एक सबूत है क्योंकि इस में वह मज़मून बयान किए गए हैं जो इस ज़माना में मख़फ़ी थे

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सूरत नहल आयत : 79 وَاللّٰهُ اَخْرَجَكُمْ مِّنْۢ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ شَيْـًٔا ۙ وَّجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ۙ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ तफ़सीर में फ़रमाते हैं :

फ़रमाता है कि हे लोगो हमने तुमको तुम्हारी माओं के पेट से जबकि तुम कुछ नहीं जानते थे तुमको आँख कान और दिल देकर दुनिया में भेजा ताकि तुम इलम सीखो लेकिन तुमने हमारी इस बख़शिश से कुछ भी फ़ायदा नहीं उठाया। न आँखों से देखा न कानों से सुना न दिल से सोचा। इस फ़िक़रा में कैसा रहम और अफ़सोस भरा हुआ है। ख़ुदा-ए-क़ादिर अपने बंदों की इस ग़फ़लत पर जिसने उन्हें अज़ाब का मुस्तहिक़ बना दिया कैसे मुहब्बत से भरे हुए शब्दों में अफ़सोस का इज़हार करता है।

इस आयत का ताल्लुक़ सूरत के मज़मून से यह है कि इस में इलहाम-ए-इलाही की ज़रूरत की एक और दलील दी गई है और वह इस तरह कि इन्सान जब पैदा होता है तो हर एक इलम से ख़ाली होता है परन्तु अल्लाह तआला उसे आँख कान और दिल देकर पैदा करता हैता वह इलम हासिल करे और उनकी मदद से वह इलम सीखता है। अतः जो दुनयवी उलूम इन्सान सीखता है वे सभी अल्लाह तआला के मुहय्या किए हुए माध्यमों से सीखता है। कोई इन्सान ऐसा नहीं जो कहे कि मुझे अल्लाह तआला के दिए हुए इन ज़राए की ज़रूरत नहीं, मैं ख़ुद ही अपने लिए हुसूल-ए-इल्म के सामान पैदा करूँगा। फिर रुहानी इलम के सीखने के लिए जो ज़राए अल्लाह तआला पैदा करता है उनके प्रयोग से उसे क्यों इंकार होता है।

आश्चर्य है कि इन्सान की सब अज़मत इन माध्यमों के प्रयोग से होती है जो उसे क़ुदरत अता फ़रमाती है। इन्सान के जिस क़दर कमालात हैं वे उन्हें ताक़तों की मदद से हासिल किए जाते हैं और उन ताक़तों के इस्तिमाल में वे कोई शर्म महसूस नहीं करता। परन्तु जब रुहानी माध्यमों का सवाल पैदा होता है तो वह कहता है मुझे उनकी क्या ज़रूरत है मैं ख़ुद अपना काम कर सकता हूँ हालाँकि जिस तरह उसे माद्दी तरक़्क़ी के लिए अता करदा जवारेह की ज़रूरत है इसी तरह रुहानी कमालात के हुसूल के लिए उसे इन सामानों की

शेष पृष्ठ 07 पर

मुत्तक़ी सच्ची ख़ुशहाली एक झोंपड़ी में पा सकता है, जो दुनिया-दार और लालच करने वाले को आलीशान महल में भी नहीं मिल सकती, जिस क़दर दुनिया ज़्यादा मिलती है, उसी क़दर विपत्तियाँ ज़्यादा सामने आ जाती हैं, अतः याद रखो कि हक़ीक़ी राहत और लज़्ज़त दुनिया-दार के हिस्सा में नहीं आती

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

ग़ौर करके देख लो कि इन्सान और दुनिया में चाहता किया है? इन्सान की बड़ी से बड़ी ख़्वाहिश दुनिया में यही है कि इस को सुख और आराम मिले और उसके लिए अल्लाह तआला ने एक ही राह मुक़र्रर की है जो तक़्वा की राह कहलाती है और दूसरे लफ़्ज़ों में इसको क़ुरआन-ए-करीम की राह कहते हैं और या उसका नाम सिराते मुस्तक़ीम रखते हैं।

कोई यह न कहे कि कुफ़्फ़ार के पास भी माल व दौलत और स्रोत होते हैं और वे अपनी ऐश-ओ-इशरत में मुनहमिक और मस्त रहते हैं। मैं तुम्हें सच्च कहता हूँ कि वह दुनिया की आँख में बल्कि ज़लील दुनिया दारों और ज़ाहिर परस्तों की आँख में ख़ुश मालूम देते हैं, किन्तु हक़ीक़त में वे एक जलन और दुख में ग्रस्त होते हैं। तुमने उनकी सूरत को देखा है परन्तु मैं ऐसे लोगों के हृदय पर निगाह करता हूँ तो एक سَعِيْر और سَلَاسِل और اَغْلَال में जकड़े हुए हैं। जैसे फ़रमाया है اِنَّا اَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ سَلٰسِلَا وَاَغْلٰلًا وَّسَعِيْرًا (दोहर : 5) वह नेकी की तरफ़ आ ही नहीं सकते। और ऐसे लुटेरे हैं कि ख़ुदा की तरफ़ उन खियानत की वजह से ऐसे दबे पड़े हैं कि पशुओं से भी बदतर हो जाते हैं। उनकी आँख हर वक़त दुनिया ही की तरफ़ लगी रहती है और ज़मीन की तरफ़ झुकते जाते हैं। फिर अंदर ही अंदर एक सोज़िश और जलन भी लगी हुई होती है। अगर माल में कमी हो जाए या हसब-ए-मुराद तदबीर में कामयाबी न हो तो कुढ़ते और जलते हैं। यहां तक कि बाज़-औक़ात दीवाने और पागल हो जाते हैं या अदालतों में मारे मारे फिरते हैं। यह वाक़ई बात है कि बेदीन आदमी भड़की हुई आग से ख़ाली नहीं होता, इस लिए कि इस को क़रार और सुकून नसीब नहीं होता, जो राहत और तसल्ली का लाज़िमी नतीजा है। जैसे शराबी एक जाम शराब पी कर एक और मांगता है और मांगता ही जाता है और एक जलन सी लगी रहती है। ऐसा ही दुनियादार भी जलन में है। उसकी आग एक दम भी बुझ नहीं सकती। सच्ची ख़ुशहाली हक़ीक़त में एक मुत्तक़ी ही के लिए हैं जिस के लिए अल्लाह तआला ने वादा फ़रमाया है कि उसके लिए दो जन्नतें हैं।

मुत्तक़ी सच्ची ख़ुशहाली एक झोंपड़ी में पा सकता है, जो दुनिया-दार और लालच करने वाले को आलीशान महल में भी नहीं मिल सकती। जिस क़दर दुनिया ज़्यादा मिलती है, उसी क़दर विपत्तियाँ ज़्यादा सामने आ जाती हैं। अतः याद रखो कि हक़ीक़ी राहत और लज़्ज़त दुनिया-दार के हिस्सा में नहीं आती। यह मत समझो कि माल की कसरत, उम्दा उम्दा लिबास और खाने किसी ख़ुशी का बायस हो सकते हैं, कदापी नहीं, बल्कि इसका आधार ही तक़्वा पर है। (मल् फ़ूज़ात, भाग प्रथम पृष्ठ 380 प्रकाशन 2018 क़ादियान)

★ ★ ★

आज विज्ञान ने साबित किया है कि सबसे पहले बच्चे के कान काम करने लगते हैं और इसके बाद आँखें और सबसे आख़िर में सोच विचार की शक्ति काम करना शुरू करती है

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ख़ुत्बः जुमअः

हज़रत अला रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा हे लोगो डरो नहीं। क्या तुम मुस्लमान नहीं हो? क्या तुम अल्लाह की राह में जिहाद करने नहीं आए? क्या तुम अल्लाह के मददगार नहीं हो?

...तुम्हें ख़ुशख़बरी हो क्योंकि अल्लाह कदापि ऐसे लोगों को जिस हाल में तुम हो कभी नहीं छोड़ेगा

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के महान ख़लीफ़ा राशद हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के बाबरकत समय में बाग़ी मुर्तद होने वालों के ख़िलाफ़ होने वाली मुहिम्मात का वर्णन

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 24 जून 2022 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّا كَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के ज़माने की बागियों के ख़िलाफ़ मुहिम्मात का वर्णन हो रहा था।

सातवीं मुहिम जो बागियों के ख़िलाफ़ थी उसके विषय में जो तफ़सील है इसके अनुसार यह मुहिम हज़रत ख़ालिद बिन सईद बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु की थी जो मुर्तद बागियों के ख़िलाफ़ भेजे गए थे। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत ख़ालिद बिन सईद बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु के लिए झंडा बाँधा और उनको शाम के सरहदी इलाक़े हमकतीन की तरफ़ भेजा।

(तारीख़ अल् तिब्री भाग 2 पृष्ठ 257 मुद्रित दारुल क़ुतुब इल्मिया लुबनान 2012 ई.)

हज़रत ख़ालिद बिन सईद बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु का पिरचय यह है कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु का नाम ख़ालिद, उपनाम अबू सईद थी। आप रज़ियल्लाहु अन्हु के पिता का नाम सईद बिन आस बिन उमय्या और माता का नाम लुबैना पुत्री हुबाब था जो उम्मे ख़ालिद के नाम से मशहूर थीं।

(ओसोदुल गाब़ा भाग 2 पृष्ठ 124 मुद्रित दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2008 ई.)

(المستدرك على الصحيحين لحاكم भाग 5 पृष्ठ 1896 हदीस 5081 मुद्रित نزار مصطفى الباز ۔الرياض-2000)

हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु बहुत आरंभिक इस्लाम लाने वालों में से थे। कुछ का वर्णन है कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के बाद इस्लाम क़बूल किया था और आप रज़ियल्लाहु अन्हु तीसरे या चौथे मुस्लमान थे और कुछ लोगों का बयान है कि आप पाँचवें मुस्लमान थे। आप रज़ियल्लाहु अन्हु से पहले अभी तक केवल हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत ज़ैद बिन हारिस रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत साद बिन अबी वक्कास रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस्लाम क़बूल किया था।

हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु के इस्लाम क़बूल करने के वाक़िया का वर्णन यह है कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने ख़ाब में देखा कि आग के किनारे पर खड़े हैं और उनका बाप उन्हें इस में गिराने की कोशिश कर रहा है और आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने देखा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आप रज़ियल्लाहु अन्हु को कमर से पकड़े हुए हैं कि कहीं आप आग में गिर न जाएं। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु इस पर घबरा कर बेदार हुए और कहा अल्लाह की क़सम यह ख़ाब सच्चा है। फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हु की मुलाक़ात हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ हुई तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपना ख़ाब हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु को सुनाया। उनसे वर्णन किया। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि तुमसे भलाई का इरादा किया गया है। अल्लाह तआला चाहता है कि तुम्हें बचाए। ये अर्थ मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं उनकी पैरवी कर लू क्योंकि जब तुम इस्लाम क़बूल करते हुए उनकी पैरवी करोगे तो वे तुम्हें आग में गिरने से बचाएगा और तुम्हारा बाप इस आग में पड़ने वाला है। इसलिए हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मक्का में अजयाद स्थान पर थे। अज भी मक्का में सफ़ा पहाड़ी से जुड़े एक मुक़ाम का नाम है जहां रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बकरियां चुराई थीं। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया कि हे मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम किस की तरफ़ बुलाते हैं? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ख़ुदा की तरफ़ बुलाता हूँ जो अकेला है और उस का कोई शरीक नहीं और यह कि मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) उस के बंदे और उस के रसूल हैं और यह कि तुम इन पत्थरों की पूजा छोड़ दो जो न सुनते हैं और न देखते हैं और न नुक़्सान पहुंचा सकते हैं और न फ़ायदा पहुंचा सकते हैं और वे नहीं जानते कि कौन उनकी पूजा करता है और कौन नहीं करता। इस पर हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि मैं गवाही देता हूँ कि कोई इबादत के लायक़ नहीं सिवाए अल्लाह के और मैं गवाही देता हूँ कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु के इस्लाम लाने पर बहुत ख़ुश हुए। इस्लाम लाने के बाद हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु छिप गए। जब उनके बाप को उनके इस्लाम लाने का इलम हुआ तो उसने अपने बाक़ी बेटों को जो इस्लाम नहीं लाए हुए थे हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु की तलाश में भेजा। इसलिए उन्होंने आप रज़ियल्लाहु अन्हु को तलाश किया और उन्हें अपने बाप के पास लाए। उनका बाप हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु को बुरा-भला कहने लगा और मारने लगा और वह सोटा जो उसके हाथ में था उसके साथ मारना शुरू किया यहां तक कि उनके सिर पर मार-मार कर तोड़ दिया और कहने लगा कि तुमने मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) की पैरवी कर ली है हालाँकि तुम उसकी क़ौम की उसके साथ मुख़ालेफ़त को देख रहे हो और उसको भी जो वे उन लोगों के माबूदों की बुराईयां वर्णन करते हैं और उन लोगों के बाप दादाओं की बुराईयां भी। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने जवाब दिया कि अल्लाह की क़सम मैं आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अनुसरण कर चुका हूँ। इस पर उनका बाप सख़्त ग़ुस्सा हुआ और उनको कहा कि हे बेवक़ूफ़ मेरी नज़रों से दूर हो जाओ और जहां चाहो चले जाओ मैं तुम्हारा खाना बंद कर दूँगा। इस पर हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि अगर आप मेरा खाना बंद कर देंगे तो अल्लाह मेरे ज़िंदा रहने के लिए मुझे रिज़्क़ अता फ़रमाएगा। इसलिए आप रज़ियल्लाहु अन्हु के पिता ने उन्हें घर से निकाल दिया और अपने बेटों से कह दिया कि उनमें से कोई इस से बात नहीं करेगा। इसलिए हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु वहां से निकले और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहिवसल्लम के साथ ही रहने लगे। उमूमी तौर पर अपने बाप से छुप कर मक्का के करीब में रहते थे कि कहीं दुबारा न पकड़ ले और फिर सख़्ती न करे।

हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु का बाप मुस्लमानों पर बहुत ज़्यादा ज़ुलम-ओ-सितम करने वाला था।

और मक्का के सम्मानित लोगों में से था। एक मर्तबा वह बीमार हुआ तो रोग की शिद्दत की वजह से उसने कहा कि अगर अल्लाह ने मुझे इस बीमारी से शिफ़ा दे दी। पता नहीं अल्लाह कहा था या अपने माबूदों का नाम लिया था। बहरहाल उसने कहा कि अगर मुझे इस बीमारी से शिफ़ा हो गई तो फिर इब इब्ने अबी कबशा अर्थात मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़ुदा की इबादत मक्का में नहीं होगी। मैं ऐसी सख़्ती करूँगा कि यहां से सब मुस्लमानों को निकाल दूँगा। जब हज़रत ख़ालिद

शेष पृष्ठ 7 पर

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की जर्मन यात्रा जून 2014 ई. (भाग-1)

(रिपोर्टः अब्दुल माजिद ताहिर साहब, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादकः सय्यद मुहयुद्दीन फ़रीद)

2 जून 2014 ई. दिन सोमवार

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ जर्मनी के यात्रा पर रवाना होने के लिए सुबह पौने दस बजे अपनी रिहायशगाह से बाहर पधारे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ को अलविदा कहने के लिए सुबह से ही जमाअत के लोग पुरुष महिलाएं मस्जिद फ़ज़ल लंदन के सेहन में एकत्र थीं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ प्रेम पूर्वक कुछ देर के लिए लोगों के मध्य उपस्थित रहे। प्रत्येक व्यक्ति अपने प्यारे आक़ा के दर्शन का सौभाग्य से फ़ैज़याब हुआ। अमीर साहब जमाअत बर्तानिया आदरणीय रफ़ीक़ अहमद हयात साहब ने हाथ मिलाने के सौभाग्य प्राप्त किया। इसके बाद हुज़ूर अनवर ने इजतेमाई दुआ करवाई जिसके बाद चार गाड़ियों पर आधारित क़ाफ़ला बर्तानिया के तटीय शहर Dover की ओर रवाना हुआ।

लंदन और इसके इर्दगिर्द के क्षेत्रों में आबाद लोग यूरोप की यात्रा साधरणतः इसी बंदरगाह से करते हैं। Dover की ओर जाते हुए, Dover से ग्यारह मील पहले वह मशहूर Channel Tunnel है जो समुंद्र के नीचे से बर्तानिया और फ़्रांस के साहिलों को आपस में मिलाती है। इस Tunnel (सुरंग) के माध्यम कारें और अन्य गाड़ियां ट्रेन के माध्यम से फ़्रांस के शहर Calais तक पहुँचती हैं। आज उसी चैनल टनल के माध्यम से क़ाफ़ले की यात्रा का प्रोग्राम था।

लंदन से आदरणीय मंसूर अहमद शाह साहब नायब अमीर जमाअत यू.के, आदरणीय अताउल-मुजीब राशिद साहब मुबल्लिग़ इंचार्ज यू.के, आदरणीय मुनीरुद्दीन शमस साहब ऐडीशनल वकील अल् तसनीफ़ लंदन, आदरणीय सय्यद वसीम अहमद साहब सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह यू.के, आदरणीय मिर्ज़ा नासिर इनाम साहब प्रिंसिपल जामिया अहमदिया यू.के, आदरणीय ज़हूर अहमद साहब दफ़्तर प्राईवेट सेक्रेटरी, आदरणीय इमरान ज़फ़र साहब मुहतमिम उमूमी ख़ुद्दामुल अहमदिया, आदरणीय महमूद अहमद ख़ान साहब हिफ़ाज़त विशेष और ख़ुद्दाम की सिक्योरिटी टीम हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ को अलविदा कहने के लिए चैनल टनल तक क़ाफ़ले के साथ आए थे।

लगभग डेढ़ घंटा की यात्रा के बाद सवा 12 बजे Channel Tunnel पहुंचे। लंदन से साथ आने वाले लोगों ने अपने प्यारे आक़ा को अलविदा कहा।

इमीग्रेशन की कार्यवाही और अन्य सफ़री मामलों की पूर्णता के बाद लगभग एक बजे गाड़ियां ट्रेन पर बोर्ड की गईं। यह ट्रेन दो मनाज़िल पर आधारित है और इसके अंदर एक समय में 180 कारें Board की जाती हैं। क़ाफ़ले की गाड़ियां पहली मंज़िल पर Board हुईं।

ट्रेन अपने समय के अनुसार एक बज कर बीस मिनट पर, 140 किलोमीटर प्रति घंटा की रफ़्तार से फ़्रांस के तटीय शहर Calais के लिए रवाना हुई। इस सुरंग की कुल लंबाई 31 मील है और इस में से 24 मील का हिस्सा समुंद्र के नीचे है। इस सुरंग का गहरा तरीन हिस्सा समुंद्र की तह से 75 मीटर अर्थात 250 फुट नीचे है। अब तक पानी के नीचे बनने वाली टनल में से यह संसार की सबसे बड़ी टनल (Tunnel) है।

लगभग 35 मिनट के यात्रा के बाद फ़्रांस के स्थानिय समय के अनुसार दो बज कर 55 मिनट पर फ़्रांस के शहर Calais पहुंचे। फ़्रांस का समय बर्तानिया के समय से एक घंटा आगे है।

ट्रेन के रुकने के बाद लगभग पाँच मिनट के वक़फ़ा से गाड़ियां ट्रेन से बाहर आईं और मोटरवे पर यात्रा शुरू हुई।

पहले से निर्धारित प्रोग्राम के अनुसार यहां से लगभग छः किलोमीटर के दूरी पर Calais शहर के क्षेत्र Chemin Vert के एक रेस्टोरेंट Courte Paille के पार्किंग एरिया में जमाअत जर्मनी से आए हुए दल ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का स्वागत करना था और प्रोग्राम के अनुसार उसी जगह मध्याह्न के खाने और नमाज़ जुहर तथा अस्र की अदायगी का प्रबन्ध किया गया था।

जमाअत जर्मनी के ख़ुद्दाम की एक गाड़ी क़ाफ़ला को Escort करते हुए रेस्टोरेंट के इस पार्किंग एरिया में ले आई जहां आदरणीय अब्दुल्लाह वागस हाऊज़र साहब अमीर जमाअत जर्मनी, आदरणीय हैदर अली ज़फ़र साहब मुबल्लिग़ इंचार्ज जर्मनी, आदरणीय मुहम्मद इलयास मजोका साहब नैशनल जनरल सेक्रेटरी, आदरणीय यहया ज़ाहिद साहब असिस्टेंट जनरल सेक्रेटरी, आदरणीय हसनात अहमद साहब सदर मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया जर्मनी, आदरणीय अब्दुल्लाह सपरा साहब, आदरणीय डाक्टर मुहम्मद अतहर ज़ुबैर साहब और आदरणीय फ़ैज़ान अहमद साहब इंचार्ज सिक्योरिटी ने अपने ख़ुद्दाम की सिक्योरिटी टीम के साथ अपने प्यारे आक़ा का स्वागत किया और स्वागतम कहा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने प्रेम पूर्वक इन सभी लोगों को हाथ मिलाने के सौभाग्य से नवाज़ा

इसके बाद खाने इत्यादि से फ़राग़त के बाद चार बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने इस रेस्टोरेंट के एक बाहरी हिस्सा में नमाज़ जुहर तथा अस्र जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर ने अज़राह-ए-शफ़क़त आदरणीय डाक्टर मुहम्मद अतहर ज़ुबैर साहब से देश Sao Tome के वर्तमान यात्रा और वहां ह्यूमैनिटी फ़रस्ट के तहत होने वाले कामों के बारे में दरयाफ़त फ़रमाया। तथा हुज़ूर अनवर ने विभिन्न मामलों के हवाला से अमीर साहब जर्मनी से बातचीत फ़रमाई।

इसके बाद चार बज कर बीस मिनट पर यहां से आगे यात्रा पर प्रस्थान हुई और मज़ीद 31 किलोमीटर की यात्रा के बाद फ़्रांस का बॉर्डर क्रास करके मुल्क बेल्जियम की सीमा में दाख़िल हुए और बेल्जियम में 308 किलोमीटर की यात्रा करने के बाद बॉर्डर क्रास करके मुल्क जर्मनी की सीमा में दाख़िल हुए और जर्मनी में मज़ीद 265 किलोमीटर का यात्रा करने के बाद लगभग नौ बज कर 40 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का जर्मनी जमाअत के केंद्र "बैयतुल सबूह" फ़्रांकफ़ुर्ट में वरूद मसऊद हुआ।

जूंही हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ कार से बाहर पधारे तो फ़्रांकफ़ुर्ट और जर्मनी के विभिन्न शहरों और जमाअतों से आए हुए जमाअत के लोग पुरुषों महिलाओं और बच्चों और बच्चियों ने अपने प्यारे आक़ा का बड़ा पुरजोश स्वागत किया। बच्चियां और बच्चे एक ही रंग के कपड़ों में मलबूस, विभिन्न समूहों की सूरत में दुआइया नज़्में और ख़ैर के गीत प्रस्तुत कर रहे थे। प्रेम और मुहब्बत से प्रत्येक ओर से हाथ बुलंद थे और लोगों पुरजोश ढंग में नारे बुलंद कर रहे थे। और आदरणीय इदरीस अहमद साहब लोकल अमीर फ़्रांकफ़ुर्ट, आदरणीय मुबारक अहमद तनवीर साहब मुबल्लिग़ सिलसिला, आदरणीय मुहम्मद अशर्फ़ ज़िया साहब मुबल्लिग़ फ़्रांकफ़ुर्ट और आदरणीय अब्दुल समी साहब जायदाद विभाग बैयतुल सबूह ने हुज़ूर अनवर को स्वागतम कहते हुए हाथ मिलाने का सौभाग्य पाया।

बेतुल-सबूह का यह बाहरी सेहन दुआइया नज़मों, ख़ैरमक़दमी कलिमात और नारा हाय तकबीर से गूंज रहा था। एक ओर महिलाएं और बच्चियां खड़ी अपने आक़ा को देख रही थीं और दर्शन के सौभाग्य से फ़ैज़याब हो रही थीं तो दूसरी ओर खड़े पुरुष जोश से नारे बुलंद कर रहे थे।

अपने प्यारे आक़ा का स्वागत करने वाले ये लोगों और फ़ैमिलीयाँ फ़्रांकफ़ुर्ट शहर के विभिन्न हलक़ों और जमाअतों के अतिरिक्त

Wiesbaden,Darmstadt, Hanau, Offenbach, Friedburg, Dietzenbach, Bad Vilbel, Karben, Taunus, Gross Gerau, Dieburg, Neu Isfnburg, Dreieish, Langen, Nidda, Rodgau और Appelheim

के क्षेत्रों और जमाअतों से भी आए थे और लम्बी यात्रा करके आए थे।कुछ दूर की जमाअतों उदाहरण के लिए eidelberg से आने वाले लोगों 145 किलोमीटर, Kassel से आने वाले लोग 170 किलोमीटर, Kol से आने वाले लोगों 500

किलोमीटर का लंबा दूरी तै करके अपने प्यारे आक़ा के स्वागत के लिए बैयतुल सबूह आए थे।

इन स्वागत करने वाले लोगों पुरुषों महिलाओं बच्चे बच्चियों की संख्या पंद्रह सौ से अधिक थी।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपना हाथ बुलंद करके सबको अस्सलामो अलैकुम कहा और दो लाइनों में खड़े अपने प्रेमियों के मध्य से गुज़रते हुए अपनी रिहायशगाह पर तशरीफ़ ले गए।

इसके बाद नौ बज कर पचपन मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने पधार कर नमाज़ मग़रिब-ओ-इशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने रिहायशी हिस्सा में तशरीफ़ ले गए।

अपने प्यारे आक़ा के स्वागत के लिए आने वाले सभी लोगों पुरुषों महिलाओं ने अपने आक़ा की पीछे नमाज़ मग़रिब-ओ-इशा पढ़ने का सौभाग्य पाया। दोनों पुरुषों के हाल और महिलाओं के दोनों हाल भरे हुए थे और एक बड़ी संख्या में लोगों ने बाहर खुले हिस्सा में भी नमाज़ अदा की। इन लोगों में से एक बड़ी संख्या ऐसे लोगों की भी थी जो इस वर्ष पाकिस्तान से यहां पहुंचे थे और उनके जीवन में हुज़ूर अनवर पीछे यह पहली नमाज़ थी। ये सभी अपनी इस सआदत और ख़ुशनसीबी पर बेहद ख़ुश थे और सजदात शुक्र बजा लाते थे और आज उन मुबारक और बाबरकत क्षण से फ़ैज़याब हो रहे थे जो उन्हें एक नया जीवन अता कर रहे थे। उनकी बरसों की तिश्नगी अपने प्यारे आक़ा के दीदार से सेराब हो रही थी और ये क्षण उनकी जीवन में पहली बार आए थे कि उन्होंने अत्यधिक क़रीब से अपने आक़ा का चेहरा मुबारक देखा था। अल्लाह तआला ये सआदतें और ये बरकतें हम सब के लिए आता फ़रमाए। आमीन

3 जून 2014 ई. दिन मंगल

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सुबह चार बजकर बीस मिनट पर बैयतुल सबूह के मस्जिद के हाल में पधार कर नमाज़-ए-फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहायशगाह पर तशरीफ़ ले गए।

सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दफ़्तरी मामलों के निवारण में व्यस्त रहे।

इन्फ़िरादी और फ़ैमिली मुलाक़ातें।

प्रोग्राम के अनुसार ग्यारह बजकर 40 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर पधारे और फ़ैमिली मुलाक़ातें शुरू हुई। आज सुबह के इस सैशन में 25 फ़ैमिलीज़ के 90 लोग और 50 लोगों ने इन्फ़िरादी तौर पर अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। इस तरह पूर्णता 140 लोग ने मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। प्रत्येक ने अपने प्यारे आक़ा के साथ तस्वीर खिचवाने का सौभाग्य पाया। हुज़ूर अनवर ने प्रेमपूर्वक शिक्षा प्राप्त करने वाले बच्चों और बच्चियों को क़लम प्रदान फ़रमाए और छोटी आयु के बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट प्रदान फ़रमाए। आज मुलाक़ात करने वाली ये फ़ैमिलीज़ 51विभिन्न शहरों और जमाअतों से आईं थी। और कुछ क्षेत्रों से लम्बी यात्रा कर के पहुंचे थे कुछ क्षेत्रों के नाम निमंलिखित हैं।

Lahir, Bad Soden, Babenhausen, Köln, Calw, Fulda, Neuhof, Groß Gerau, Frankthal, Bruchsal, Bocholt, Wießbaden, Offenbach, Waben, Mannheim, Eich Worms, Dresden, Ginsheim, Münster, Friedberg, Maintal, Hannover, Mörfelden, Iserlohn, Darmstadt, Auf Esch, Würzburg, Rüsselsheim, Bremen, Stuttgart.

मुलाक़ातों का यह प्रोग्राम मध्याह्न एक बजकर 40 मिनट तक जारी रहा।

समारोह

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ मस्जिद में तशरीफ़ ले आए जहां प्रोग्राम के अनुसार आमीन का समारोह हुआ। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अज़ राहे शफ़क़त निमंलिखित 25 बच्चों और बच्चियों से क़ुरआन-ए-करीम की एक-एक आयत सुनी और दुआ करवाई। जो ख़ुशनसीब बच्चे इस समारोह में शामिल हुए उनके नाम निमंलिखित हैं। प्रिय जाज़िब महमूद, करीम अब्दुल्लाह ख़ान, अर्हम मालिक, राना शाज़िल अहमद, हमज़ा अहमद शकूर, ख़ाक़ान अहमद चौधरी, अंसर अहमद सोलनगी, फ़ारस अहमद, मूसा तारिक़ काहलों, एजाज़ चौधरी।

प्रिय पुल्वाषा अहमद, काशिफ़ा अहमद, सबीहा महमूद, बारेआ अमजद, आएज़ा अहमद, प्रिय ला-रेब अनवार, शुमायला अहमद बट, मुस्कान हमीद, लाएबा सिद्दीक़ी, सायरा ज़िया, प्रिय सानिया अलीशा अहमद, जानीका अहमद, सय्यदा तंज़ीला शाह, मशअल मिर्ज़ा, प्रिय अरूबा आफ़रीन राय।

आमीन के इस समारोह के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दो बजे नमाज़ ज़ुहर अस्र जमा करके पढ़ाई।

नमाज़ जनाज़ा।

नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने एक जर्मन अहमदी मित्र Musa Peter Flechtner साहब की नमाज़ जनाज़ा हाज़िर पढ़ाई। उन्हों ने 26 वर्ष पूर्व थाईलैंड में एक महिला से शादी की जिसका बाप अहमदी था। इस लिए यह अपने सुसर की तब्लीग़ के परिणाम में अहमदी हुए और फिर जर्मनी आने के बाद भी जमाअत से सम्पर्क रखा और विभिन्न स्थानों पर जमाअत की सेवा करते रहे और अहमदियत पर साबित-क़दम रहे। एक जून 2014 ई. को उनकी वफ़ात हुई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहायशगाह पर तशरीफ़ ले गए।

प्रोग्राम के अनुसार छः बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर पधारे। आदरणीय आबिद वहीद ख़ान साहब इंचार्ज प्रैस ऐंड मीडिया ऑफ़िस लंदन ने दफ़्तरी मुलाक़ात की और कुछ मामलों के बारे में रहनुमाई प्राप्त की।

इन्फ़िरादी-ओ-फ़ैमिली मुलाक़ातें।

इसके बाद फ़ैमिली मुलाक़ातें शुरू हुईं। आज शाम के इस सैशन में 38 फ़ैमिलीज़ के 150 लोग ने और 55 लोगों ने इन्फ़रादी तौर पर अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया।

हुज़ूर अनवर ने प्रेम पूर्वक शिक्षा प्राप्त करने वाले बच्चों और बच्चियों को क़लम प्रदान फ़रमाए। प्रत्येक ने अपने आक़ा के साथ तस्वीर खिचवाने का सौभाग्य भी पाया।

आज सुबह और शाम के सैशन में जिन फ़ैमिलीज़ और लोगों ने अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। ये लगभग सभी अपनी जीवन में पहली बार हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात का सौभाग्य पा रहे थे। और उनमें से एक बड़ी संख्या इन मज़लूमीन की थी जो पाकिस्तान में अपने ही हम वतनों के ज़ुलम-ओ-सितम और उनकी ओर से दिए जाने वाले कष्टों से सताए हुए अपने घर-बार छोड़ कर, अपने अज़ीज़-ओ-अक़ारिब से दूर यहां इस दुसरे देश में आ बसे थे। आज का दिन उनकी जीवन में बे-इंतिहा बरकतें समेटे हुए आया था। उनकी भावनाओं का वर्णन करने की शक्ति से परेथे। मुलाक़ातों में प्यारे आक़ा का सौभाग्य दीदार पाया, अपने आक़ा का क़ुरब पाया और उन कुछ क्षण में बे-इंतिहा बरकतें समेटें और सब तकालीफ़ और परेशानियाँ दूर हुईं और हृदय की संतुष्टि पाकर भीगी आँखों और मुस्कुराते हुए चेहरों के साथ बाहर निकले। उनकी समस्त परेशानियाँ राहत-ओ-सुकून और हृदय की शांति में बदल गईं। दीदार की प्यास बुझी और यह मुबारक क्षण उन्हें हमेशा के लिए सेराब कर गए। अल्लाह यह सआदतें इन सब के लिए बाबरकत फ़रमाए और उनकी नसलें भी इस से फ़ैज़याब हों आमीन।

मुलाक़ातों का ये प्रोग्राम साढ़े आठ बजे तक जारी रहा। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहायशगाह पर तशरीफ़ ले गए।

समारोह

प्रोग्राम के अनुसार नौ बजकर 25 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ मस्जिद के हाल में पधारे जहां आमीन का समारोह आयोजित हुआ।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अज़राह-ए-शफ़क़त निमंलिखित 26 बच्चों और बच्चियों से क़ुरआन-ए-करीम की एक-एक आयत सुनी और अंत में दुआ करवाई।

प्रिय सजल रशीद, अनीशा ऐवान, हायफ़ा यूसुफ़, ईशा तारिक़, रुमाना नदीम, सालेहा मलिक, समरीन मलिक, मदीहा मलिक, उज़्मा मलिक, खन्सा महमूद, ईषा माह नूर ख़ान, नौरीन इक़बाल, हदीक़ा अहमद, अतीयतुल बसीर, शाफिया ज़हीर।

प्रिय फ़ैसल हस्सान अहमद, शाहज़ेब तनवीर, मुनीब मलिक सजील ज़फ़र, वासिफ़ कामरान, सरमद अहमद खोखर, अदनान अहमद, इंतेसार अहमद, सफ़ीर ज़हीर,मलिक सफ़ीर अहमद, राय राफ़े अहमद।

आमीन के समारोह के बाद नौ बजकर 45 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु

तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने नमाज़ मग़रिब-ओ-इशा जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी क़ियामगाह पर तशरीफ़ ले गए।

5 जून 2014 ई. बुधवार के दिन

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सुबह चार बज कर बीस मिनट पर पधार कर नमाज़-ए-फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहायशगाह पर तशरीफ़ ले गए।

सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दफ़्तरी डाक, पत्र संसार के विभिन्न देशों से प्राप्त होने वाली फैक्सज़ और रिपोर्टस मुलाहिज़ा फरमाई और हिदायात से नवाज़ा और विभिन्न दफ़्तरी मामलों के निवारण में व्यस्तता रही।

मध्याह्न दो बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने पधार कर नमाज़ जुहर तथा अस्र जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी क़ियामगाह पर तशरीफ़ ले गए।

पिछले-पहर भी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ विभिन्न प्रकार के दफ़्तरी मामलों के निवारण में व्यस्त रहे। प्रोग्राम के अनुसार साढ़े छः बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर पधारे और फ़ैमिली मुलाक़ातें शुरू हुई।

इन्फ़रादी और फ़ैमिली मुलाक़ातें।

आज प्रोग्राम के अनुसार 40 फ़ैमिलीज़ के 141लोग और 53 लोग ने इन्फ़िरादी तौर पर अर्थात कुल 194 लोग ने अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। मुलाक़ात का सौभाग्य पाने वालों में फ्रांकफ़ुर्ट की जमाअत से आने वाली फ़ैमिलीज़ और लोगों के अतिरिक्त विभिन्न जमाअतों

Limburg, Bad Kreuznach, Ludwigshafen, Olpe, Mannheim, Calw, Ellwangen, Herford, Paderborn, Trier, Frankenthal, Goddelau, Iserlohn, Bad Soden, Nidda, Rodgau, Nauheim, Wetter, Borken

ग्रास केराओ, कासल, स्टट गार्ड, वेज़ बादिन, नासिर बाग़, बरख़साल, ओसना ब्रूक और डारमसटड से आने वाली फ़ैमिलीज़ और लोगों शामिल थे। संपूर्णता जर्मनी की 58 जमाअतों से ये लोगों आए। इन सभी फ़ैमिलीज़ और लोगों ने अपने आक़ा के साथ तस्वीर खिचवाने का सौभाग्य भी पाया और कुछ समयअपने आक़ा के क़ुरब में गुज़ारें। प्रत्येक बाबरकत क्षण से बरकतें समेटते हुए बाहर आया। बीमारों ने अपनी सेहतयाबी के लिए दुआएं प्राप्त कीं और विभिन्न परेशानियों और समस्याओं में घिरे हुए लोगों ने अपनी तकालीफ़ दूर होने के लिए दुआ की दरख़ास्तें कीं और हृदय की संतुष्टि पाकर मुस्कुराते हुए चेहरों के साथ निकले।

बाज़ों ने अपने विभिन्न विषयों के हवाला से रहनुमाई प्राप्त की। विद्यार्थियों ने तालीमी मैदान में सफ़लता के लिए अपने प्यारे आक़ा से दुआएं प्राप्त कीं। उद्देश्य प्रत्येक ने अपने महबूब आक़ा की दुआओं से हिस्सा पाया और उनकी तकालीफ़ और परेशानियाँ राहत-ओ-सुकून और हृदय की शांति में बदल गईं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अज़राह-ए-शफ़क़त शिक्षा प्राप्त करने वाले बड़े बच्चों और बच्चियों को क़लम प्रदान फ़रमाए और छोटी आयु के बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट प्रदान फ़रमाए।

मुलाक़ातों का यह प्रोग्राम साढ़े आठ बजे तक जारी रहा। इसके बाद नौ बज कर पच्चीस मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ मस्जिद के हाल में पधारे जहां प्रोग्राम के अनुसार समारोह हुआ।

आमीन का समारोह।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने निमंलिखित 25 ख़ुशनसीब बच्चों और बच्चियों से क़ुरआन-ए-करीम की एक-एक आयत सुनी और अंत में दुआ करवाई।

इन बच्चों और बच्चियों के नाम ये हैं।

प्रिय वलीद अहमद, फ़ारूक़ अहमद, बासिल अहमद, मुस्तफ़ा चीमा, आसिम समीर नाज़, अहमद तंज़ील रज़ा, नोमान मुबश्शिर, तबारक अहमद, जाज़िब अहमद ख़लील, दानियाल अहमद चौधरी, अंसर अहमद, मीकाईल अदनान कलीम, मसरूर सरमद अहमद, अज़ीज़ शीराज़, मुनीब अहमद, यासिर अहमद।

प्रिय सुबीका मुस्कान, सुबीका राय, ताशका करीम, खोला मलिक, नायला सलामत शेख़, नईमा अशर्फ़, एमन फ़ातिमा नून, मावरा तारिक़, जाज़िबा हामिद।

आमीन के समारोह के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने नमाज़ मग़रिब-ओ-इशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहायशगाह पर तशरीफ़ ले गए।

6 जून 2014 ई. बुधवार का दिन

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सुबह चार बजकर बीस मिनट पर पधार कर नमाज़-ए-फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहायशगाह पर तशरीफ़ ले गए।

सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दफ़्तरी डाक और रिपोर्टस मुलाहिज़ा फ़रमाई और हिदायात से नवाज़ा और विभिन्न दफ़्तरी मामलों के निवारण में व्यस्तता रही।

ख़ुतबा जुमआ।

आज नमाज़-ए-जुमआ की अदायगी का प्रबन्ध बैयतुल सबूह फ्रांकफ़ुर्ट से पाँच मिनट की दूरीपर 'Sport & Recreation Centre Kalbach में किया गया था। यह एक बड़ा कम्पलैक्स है और एक बहुत बड़ा हाल है जिसके मध्य में पर्दा लगा कर एक हिस्सा मर्दों के लिए और दूसरा हिस्सा महिलाओं के लिए विशेष किया गया था। इस हाल के क़रीब ही गाड़ियों की पार्किंग का प्रबन्ध किया गया था।

नमाज़-ए-जुमा की अदायगी के लिए जर्मनी की विभिन्न जमाअतों से जमाअत के लोग पुरुष और महिलाओं सुबह से ही फ्रांकफ़ुर्ट पहुंचना शुरू हो गए थे। फ्रांकफ़ुर्ट जमाअत के विभिन्न हलक़ों और इर्द-गिर्द के क्षेत्रों और जमाअतों से बड़ी संख्या में लोगों अपने आक़ा के पीछे नमाज़-ए-जुमआ की अदायगी के लिए पहुंचे।

इसके अतिरिक्त कुछ दूर की जमाअतों और शहरों से बड़ी लम्बी यात्रा करके लोगों नमाज़-ए-जुमा के लिए पहुंचे।

Fulda और Koblenz से आने वाले 125 किलोमीटर, Köln से आने वाले 190 किलोमीटर और Kassel से आने वाले 196 किलोमीटर और Stuttgart से आने वाले 220 किलोमीटर की यात्रा कर के पहुंचे थे।

इसी तरह Stade से वाले 400 किलोमीटर और Bremen से शामिल होने वालों ने 450 किलोमीटर जब कि Hamburg से आने वलों ने 550 किलोमीटर और Berlin से आने वालों ने 558 किलोमीटर की तवील यात्रा कर के नमाज़-ए-जुमा में शमूलियत की।

ये सब लोग और फ़ैमिलीज़ इतनी तवील यात्रा करके केवल इस लिए फ्रांकफ़ुर्ट पहुंचे थे कि अपने प्यारे आक़ा की इक़तदा में नमाज़-ए-जुमा अदा करने का सौभाग्य पा सकें। आज नमाज़-ए-जुमा अदा करने वालों की संख्या संपूर्णता पाँच हज़ार से अधिक थी। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दो बजे मध्याह्न यहां पधार कर ख़ुतबा जुमा फ़रमाया।

ख़ुतबा जुमा का मुकम्मल मतन बदर के अंक में प्रस्तुत हो चूका है

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का यह ख़ुतबा जुमा तीन बजकर पाँच मिनट तक जारी रहा। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने नमाज़-ए-जुमा और नमाज़-ए-अस्र जमा कर के पढ़ाई।

नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहायशगाह पर पधारे। आज का ख़ुतबा जुमा M.T.A इंटरनैशनल के माध्यम से यहां से दुनिया-भर में Live प्रसारित हुआ। यहां स्थानीय तौर पर ख़ुतबा जुमा का जर्मन भाषा में रवां अनुवाद भी किया गया।

शेष आगे .....

हदीस नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और यदि खड़े होकर संभव न हो तो बैठ कर और यदि बैठ कर भी संभव न हो तो पीठ के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

काबुल की ज़मीन में शांति उस वक़्त होगी जब ये लोग ख़ुदा तआला की ओर रुजू करेंगे और ख़ुदा तआला के भेजे हुए की बात को सुनेंगे

एक अहमदी मुस्लमान शोधकर्ता को बहुत गहरी सोच रखनी चाहिए साथ-साथ अपनी रिसर्च के लिए अल्लाह तआला से दुआ भी करते रहना चाहिए कि जो रिसर्च वह कर रहा है वह इस क़दर लाभदायक हो कि पूरी इन्सानियत इस से फ़ायदा उठाए और पूरी दुनिया के लिए मुफ़ीद हो और तौहीद को क़ायम करने वाली हो

सय्यदना हज़रत अमीरुल मौमेनीन ख़लीफ़तुल-मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से वर्चूअल मुलाक़ात

मौरख़्ऱा 22 अगस्त 2021 ई. को मज्लिस खुद्दामुल अहमदिया जर्मनी के विद्यार्थियों को सालाना इजतेमा के अवसर पर अंतिम सैशन में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से आन लाईन मुलाक़ात का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

हुज़ूर अनवर इस मुलाक़ात के लिए अपने दफ़्तर इस्लामाबाद (टलफ़ोरड) में पधारे हुए थे जबकि 1700 से अधिक ख़ुद्दाम ने FSV स्टेडियम frankfurt से ऑनलाइन शिरकत की।

इस अवसर पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की बाबरकत मौजूदगी में मूसलाधार बारिश होने लगी जबकि शामिल होने वाले बिना छत के ग्रांऊड में बैठे थे। हुज़ूर अनवर ने प्रेमपूर्वक उपस्थित लोगों से दरयाफ़त फ़रमाया कि क्या उन्हें कोई मुश्किल तो नहीं हो रही जिस पर सदर मज्लिस खुद्दामुल अहमदिया जर्मनी ने उत्तर दिया कि हुज़ूर अभी तो किसी किस्म की दुशवारी नहीं है और इं शा अल्लाह हम बैठे रहेंगे। बारिश जैसी भी होगी इं शा अल्लाह।

इस के बाद तिलावत क़ुरआन-ए-करीम हुई और इस के बाद मैंबरान मज्लिस खुद्दामुल अहमदिया को सवालात पूछने का अवसर मिला।

एक ख़ादिम ने हुज़ूर-ए-अनवर से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की काबुल के मुताल्लिक़ भविष्यवाणी के हवाला से पूछा कि क्या काबुल की ज़मीन को कभी अमन नसीब होगा और कैसे?

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि काबुल की ज़मीन में अमन होगा। उस वक़्त होगा जब ये लोग ख़ुदा तआला की तरफ़ रुजू करेंगे और ख़ुदा तआला के भेजे हुए की बात को सुनेंगे। और जो उन्होंने ज़ुलम किए हैं उस का मुदावा करेंगे और उसका मुदावा यही है कि अल्लाह तआला ने इस ज़माने में जिस इमाम को भेजा है, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के जिस ग़ुलाम को भेजा है कि दीन की पुनः इशाअत करे और दुनिया में फैलाए उस को मानेंगे तो फिर दुनिया में अमन क़ायम होगा और यही शर्त काबुल के लिए है। नहीं तो इसी तरह लड़ाईयां और फ़साद और झगड़े होते रहेंगे और देख लें उमूमी तौर पर मुस्लिम उम्मा का भी यही हाल है। कहते यह हैं कि हम ज़ुलम नहीं करेंगे। क़ुरआन शरीफ़ में तो अल्लाह तआला ने लिखा है कि एक मोमिन की जान, एक कलमा पढ़ने वाले की जान लेना तुम्हें जहन्नुम में ले के जाएगी। यह कलिमा पढ़ने वाले को मारते चले जा रहे हैं। तो इस तरह तो फिर अमन क़ायम नहीं होता। अल्लाह तआला के हुक्मों को तो मानना पड़ेगा। अल्लाह तआला की बातों को मानेंगे तो अमन होगा। अल्लाह तआला के भेजे हुए की मुख़ालेफ़त को बंद करेंगे तो अमन क़ायम होगा और हमारा काम यही है कि इस पैग़ाम को पहुंचाते रहना और कोशिश और दुआ भी करते रहना कि अल्लाह तआला करे कि इन लोगों को अक़्ल आजाए और ये मानने वाले हों। या कम से कम अपने व्यवहारों को ठीक करने वाले हूँ, ज़ुल्मों को ख़त्म करने वाले हों फिर भी अमन की कोई गुंजाइश है और फिर अल्लाह तआला माफ़ करने वाला भी है, माफ़ भी करता है।

फिर एक ख़ादिम ने सवाल किया कि जर्मनी में कुछ माह में पोलीटिक्ल इलैक्शन हैं जिसकी वजह से एक बड़ा पोलीटिक्ल चेंज आएगा क्योंकि उस वक़्त की चांसलर फिर से मुंतख़ब नहीं हो सकती।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि केवल वह रिटायर्ड हो रही है इसलिए वह दुबारा नहीं आएगी। तो इस की पार्टी अगर जीत जाएगी तो पालिसी तो वही रहेगी। अगर उसकी पार्टी जीत जाएगी तो पार्टी की पालिसी तो तक़रीबन वही होती है। थोड़ी बहुत बातें होती हैं जो चांसलर अपनी मर्ज़ी से कर रहा होता है। अगर दूसरी पार्टी आएगी तो उनकी भी पालिसीज़ मिली जुली हैं सिवाए जो ऐन्टी इस्लाम पार्टीयां या far right पार्टीयां हैं जो राइटसट हैं अगर वे आते हैं तो फिर मुस्लमानों के लिए मसायल पैदा हो सकते हैं लेकिन मेरे ख़्याल में जर्मनी में बेशक मुस्लमानों के ख़िलाफ़ एक चीज़ या ग़ैर मुल्कीयों के ख़िलाफ़ ऐसे जज़बात पाए जाते हैं, भावनाएं पाई जाती हैं, ख़्यालात पाए जाते हैं लेकिन इसके बावजूद जो फ़ार राइट पार्टीयां हैं वे नहीं जीतेंगी। मेरा ख़्याल यही है और मिली जुली पार्टीयां ही जीतेंगी।

एक ख़ादिम ने हुज़ूर अनवर से सवाल किया कि एक अहमदी शोधकर्ता को किस mind-set के साथ रिसर्च करनी चाहिए?

इस सवाल के जवाब में हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि एक अहमदी मुस्लमान के लिए यह निहायत ज़रूरी है कि वह बहुत मेहनत करे। ग़ैर अहमदी और ग़ैर मुस्लिम भी बहुत मेहनत करते हैं और अपनी रिसर्च के बारे में सोचते रहते हैं। वह एक पहलू से कमज़ोर हैं और वह यह है कि वह अल्लाह तआला से मदद नहीं मांगते। हुज़ूर अनवर ने मज़ीद फ़रमाया कि एक अहमदी मुस्लमान शोधकर्ता को दूसरे रिसर्चर्ज़ की तरह बहुत गहरी सोच रखनी चाहिए जैसा कि दूसरे रखते हैं, लेकिन साथ-साथ अपने काम के लिए और अपनी रिसर्च के लिए अल्लाह तआला से दुआ भी करते रहना चाहिए। इस को दुआ करनी चाहिए कि जो रिसर्च वह कर रहा है वह इस क़दर लाभदायक हो कि पूरी इन्सानियत इस से फ़ायदा उठाए और पूरी दुनिया के लिए मुफ़ीद हो और तौहीद को क़ायम करने वाली हो।

एक ख़ादिम ने सवाल किया कि अगर ख़ाब में कोई ख़लीफ़ा नज़र आएं तो क्या उसकी यह ताबीर की जा सकती है कि यह सच्ची ख़ाब है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि पता नहीं सच्ची ख़ाब है कि ग़लत है। लेकिन नामों की ताबीर होती है, खलिफ़ा जो हैं उनके नाम भी अच्छे हैं और नेक ख़ाब है और नेकी की बात कर रहे हैं तो वह सच्ची ख़ाब होगी, यह तो सयाक़-ओ-सबॉक् से पता लगता है। आगे पीछे जो ख़ाब के है वह किया है किस तरह की है। मुख़्तलिफ़ ख़ाबों की मुख़्तलिफ़ ताबीरें होती हैं। केवल एक चीज़ को देख लेना तो बात नहीं है। कुछ ख़्वाबें होती हैं उनकी ताबीर नामों के हिसाब से भी हो जाती है। कुछ जो हालात उस वक़्त पेश आ रहे होते हैं, ख़ाब में नज़र आ रहे होते हैं उनके हिसाब से होती है। अब कोई कह दे मुझे अमुक ख़लीफ़ा नज़र आए उन्होंने कहा कि तुम नमाज़ें पढ़नी छोड़ दो तो वह तो जायज़ नहीं है।

एक लतीफ़ा है, हमारे एक बुज़ुर्ग होते थे उनका एक इकलौता बेटा था और बुढ़ापे में पैदा हुआ। वह नमाज़ें पढ़ने में बड़ा सुस्त था। इस के अब्बा बड़े अमीर आदमी थे और बहुत बड़ी सयासी पार्टी के ख़ानदान के थे। उनकी बीवी फ़ौत हो गई थीं, बेटा उनके साथ रहता था। ख़ैर अपने बेटे को रब्वाह में तालीम दिलवाने के लिए ले के आए। एक दिन बेटा उठ के कहता है कि अब्बा जी। ख़लीफ़ा सानी मुझे ख़ाब में आए और उन्होंने कहा बच्चे तुम नमाज़ें न पढ़ा करो। वे बुज़ुर्ग बड़े होशयार थे। उनका पलंग दरवाज़े की तरफ़ था और इस से आगे दीवार की तरफ़ उनके बेटे का पलंग होता था। तो कहते कि बेटा जो मेरी मंजी टप के तेरे कोल आए मेरे कन विच क्यों न कह गए, उन्होंने कहने के लिए कि नमाज़ें न पढ़ा करो मेरा पलंग टपा, तुम्हारे पास गए। तो यह इस तरह की बातें जो हैं यह depend करती हैं कि ख़ाब बनाई हुई है या वाक़ई हक़ीक़ी ख़ाब है ।

हज़ूरा अनवर ने इस इजतिमा के आख़िर पर फ़रमाया कि अच्छा सदर साहिब वक़्त ख़त्म हो गया है और माशा अल्लाह बारिश भी सारे, ख़ुद्दाम ने अपने ऊपर ले ली। यह मैंने देख लिया कि माशा अल्लाह आपके ख़ुद्दाम में सब्र और हौसला है। कम से कम इतनी ताक़त है, इतना इज़हार है कि बारिश को बर्दाश्त कर सकें। अल्लाह तआला उनमें मज़ीद कुवैत-ए-बर्दाश्त और ताक़त भी पैदा करे और ये हक़ीक़त में दीन के ख़ादिम बनने वाले हों और अपने इस मक़सद को हासिल करने वाले हों जो खुद्दामुल अहमदिया का मक़सद है और जो अह्द करते हैं यह हमेशा कि हम दीन को दुनिया पर मुक़द्दम रखेंगे इस पर अमल करने वाले हों और ख़िलाफ़त की हिफ़ाज़त करने वाले हों और अपनी तमाम-तर सलाहियतों के साथ इस बारे में कोशिश भी करें अपने दीनी इलम को भी बढ़ाएं और इस्लाम और अहमदियत का पैग़ाम भी अपने मुल्क में फैलाने वाले हों। अल्लाह तआला आप सबको इस की तौफ़ीक़ अता फरमाएं (आमीन)

(शुक्रिया अख़बार अल् फ़ज़ल इंटरनैशनल 10 सितंबर 2021)

★ ★ ★

पृष्ठ 01 का शेष

ज़रूरत है जो अल्लाह तआला अपनी हिक्मत-ए- कामला से इस के लिए पैदा करता है।

आयत के अख़ीर में फ़रमाता है कि इन चीज़ों के देने का उद्देश्य तो यह था कि तुम्हारे अन्दर अल्लाह तआला के फ़ज़्लों की क़दर पैदा हो। तुम उल्टा उन ताक़तों से मग़रूर हो जाते हो और कहते हो कि हमें किसी बैरूनी मदद की ज़रूरत नहीं।

इस आयत में कानों के बाद आँखों और आँखों के बाद दिलों का वर्णन किया गया है और इसी तर्तीब से ये अंग इन्सान के इलम के बढ़ाने का मूजिब होते हैं। सबसे पहले बच्चे के कान काम करते हैं। उनके बाद आँखें और सबके बाद दिल अर्थात सोच विचार की शक्ति काम करती है। आज विज्ञान ने साबित किया है कि सबसे पहले बच्चे के कान काम करने लगते हैं और इस के बाद आँखें काम शुरू करती हैं और सबसे आख़िर में सोच विचार की शक्ति काम करना शुरू करती है। इसलिए जानवरों में बच्चों की आँखें कई दफ़ा कई कई दिन के बाद खुलती हैं। इस अरसा में केवल कान काम कर रहे होते हैं। इन्सानों के बच्चों की आँखें ज़ाहिर खुली होती हैं लेकिन उनका काम कानों के काम के बाद शुरू होता है और सोच विचार की शक्ति तो एक अरसा के बाद काम शुरू करती है। यह तर्तीब भी क़ुरआन-ए-करीम के कलाम इलाही होने का एक सबूत है क्योंकि इस में वह मज़मून बयान किए गए हैं जो इस ज़माना में गुप्त थे। (तफ़सीर-ए-कबीर, भाग 4, पृष्ठ 208 मुद्रित 2010 क़ादियान)

★ ★ ★

पृष्ठ 2 का शेष

रज़ियल्लाहु अन्हु को मालूम हुआ तो उन्होंने अपने बाप के ख़िलाफ़ दुआ की कि हे अल्लाह इस को शिफ़ा न देना। इसलिए वे इसी बीमारी में मर गया।

जब मुस्लमानों ने हब्शा की तरफ़ दूसरी हिज्रत की तो हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु भी उनके साथ चले गए।

उनके साथ उनकी बीवी उमीमा पुत्री ख़ालिद ख़ुज़ाई भी थी। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु के एक और भाई हज़रत अम्र बिन सईद ने भी उनके साथ हिज्रत की। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ग़ज़व-ए-ख़ैबर के ज़माना में हब्शा से हज़रत जाफ़र बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में पहुंचे। ग़ज़व-ए-ख़ैबर में शरीक नहीं हुए थे लेकिन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने माल-ए-ग़नीमत में उनको भी हिस्सा दिया। इसके बाद उम्रतुल कज़ा, फ़तह मक्का,ग़ज़व-ए-हनीन, तायफ और तबूक इत्यादि सब में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हम-रिकाब रहे।

(ओसोदुल गाब़ा भाग 2 पृष्ठ 124-125 मुद्रित दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2008 ई.)

(फ़र्हंग सीरत पृष्ठ 30 ज़व्वार अकैडमी कराची)

आप रज़ियल्लाहु अन्हु ग़ज़व-ए-बदर में शरीक नहीं हो सके थे इस महरूमी पर हमेशा पश्चात्तापी रहे। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हम लोग आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ ग़ज़व-ए-बदर में शरीक नहीं हो सके। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया क्या तुम्हें यह पसंद नहीं कि लोगों को एक हिज्रत का शरफ़ हासिल हो और तुमको दो हिजरतों का।

(तबक़ात इब्ने साद भाग 4 पृष्ठ 75 मुद्रित दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु ने दीबाचा तफ़सीरुल क़ुरआन में जो कातेबीन वह्यी के नाम बयान फ़रमाए हैं उनमें हज़रत ख़ालिद बिन सईद बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु का नाम भी है।

(दीबाचा तफ़सीरुल क़ुरआन, अनवारुल उलूम भाग 20 पृष्ठ 425)

हज़रत ख़ालिद बिन सईद रज़ियल्लाहु अन्हु को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यमन के सदक़ात वसूल करने पर मुक़र्रर फ़रमाया था। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात तक आप रज़ियल्लाहु अन्हु इसी मन्सब पर रहे। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात के बाद मदीना आ गए तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनसे फ़रमाया कि तुम वापिस क्यों आ गए हो ? उन्होंने कहा कि वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद किसी की तरफ़ से काम नहीं करेंगे। कहा जाता है कि उन्होंने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु की बैअत में देरी की लेकिन जब बनू हाशिम ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु की बैअत कर ली तो हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु की बैअत करली। फिर बाद में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन्हें मुख़्तलिफ़ अवसरों पर लश्करों का अमीर बना कर भेजा। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु जंग मरजू सफ़र में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के अहद-ए-ख़िलाफ़त में शहीद हुए और कुछ लोगों का बयान है कि जंग मरजू सफ़र कि14 हिज्री में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के दौर-ए-ख़िलाफ़त के शुरू में हुई थी। कहा जाता है कि हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु मुल्क-ए-शाम में जंग अजनाद में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु की वफ़ात से चौबीस दिन पहले शहीद हुए थे।

(ओसोदुल गाब़ा भाग 2 पृष्ठ 125 मुद्रित दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2008 ई.)

तारीख-ए-तबरी में हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु की मुर्तद होने वालों के ख़िलाफ़ मुहिम की तफ़सील

यूं बयान हुई है : हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने जब मुर्तद होने वालों की सरकूबी के लिए झंडे बाँधे और जिन्हें मुंतख़ब करना था कर लिया तो उनमें से एक हज़रत ख़ालिद बिन सईद रज़ियल्लाहु अन्हु भी थे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु को उन्हें अमीर मुक़र्रर करने से मना किया और अर्ज़ किया कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु उनसे कोई काम न लें। हज़रत अबूबकर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि नहीं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की राय से इख़्तेलाफ़ किया और हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु को तयमा में इमदादी दस्ता पर निर्धारित कर दिया। तयमा भी शाम और मदीना के मध्य एक मशहूर शहर है। इसलिए हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने जब हज़रत ख़ालिद बिन सईद

रज़ियल्लाहु अन्हु को तयमा जाने का हुक्म दिया तो फ़रमाया कि अपनी जगह से न हटना और अतराफ़ के लोगों को अपने से मिलने की दाअवत देना और केवल उन लोगों को क़बूल करना जो मुर्तद न हुए हों और किसी से लड़ाई न करना सिवाए इस के जो तुमसे लड़ाई करे यहां तक कि मेरे अहकाम पहुंच जाएं। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने तयमा में क़ियाम किया और अतराफ़ की बहुत सी जमाअतें उनसे आ मिलीं। रोमियों को मुस्लमानों के इस अज़ीमुश्शान लश्कर की ख़बर पहुंची तो उन्होंने अपने ज़ेरे असर अरबों से शाम की जंग के लिए फ़ौजें तलब कीं। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने रोमियों की तैयारी और अरब क़बायल की आमद के मुताल्लिक़ हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु को अवगत किया। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने जवाब लिखा कि तुम पेशक़दमी करो। ज़रा मत घबराओ और अल्लाह से मदद तलब करो।

हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु यह उत्तर मिलते ही दुश्मन की तरफ़ बढ़े और जब क़रीब पहुंचे तो दुश्मन पर कुछ ऐसी हैबत तारी हुई कि सब अपनी जगह छोड़ कर इधर-उधर मुंतशिर हो गए और भाग गए। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु दुश्मन के मुक़ाम पर क़ाबिज़ हो गए। अक्सर लोग जो हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु के पास जमा थे मुस्लमान हो गए। इस कामयाबी की इत्तिला हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु को दी। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने लिखा कि तुम आगे बढ़ो परन्तु इतना आगे न निकल जाना कि पीछे से दुश्मन को हमला करने का अवसर मिल जाए।

(तारीख़ अल् तिब्री भाग 2 पृष्ठ 331-332 मुद्रित दारुल क़ुतुब इल्मिया लुबनान 2012 ई.)

(फ़र्हंग सीरत पृष्ठ 78 ज़व्वार अकैडमी कराची)

कुतुब-ए-तारीख़ से हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के दौर में मुर्तद होने वालों के ख़िलाफ़ हज़रत ख़ालिद बिन सईद रज़ियल्लाहु अन्हु की कार्यवाईयों का केवल इतना ही वर्णन मिलता है। इस के इलावा हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के दौर में फ़ुतूहात-ए-शाम के वर्णन में उनका किरदार जो है वह आइन्दा वर्णन हो जाएगा।

आठीं मुहिम हज़रत तुरेफा बिन हाजिज़ की मुर्तद बागियों के ख़िलाफ़ मुहिम थी। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक झंडा हज़रत तुरी बिन हाजिज़ के लिए बाँधा और उनको हुक्म दिया कि वह बनू सुलेमावर बनू हवाज़िम हो का मुक़ाबला करें।

(तारीख़ अल् तिब्री भाग 2 पृष्ठ 257 मुद्रित दारुल क़ुतुब इल्मिया लुबनान 2012 ई.)

एक रिवायत में है कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने क़बीला बनू सलीम और बनू हवाज़िन के मुक़ाबले के लिए मान बिन हाजिज़ को भेजा था। बहरहाल अल्लामा इब्ने अब्दुल बदर ने अल् इस्तेयाब में हज़रत ज़रीफ़ा और माअन के पिता का नाम हाजिज़ यानी ज़ा के साथ और अल्लामा इब्ने असीर ने ओसोदुल गाबा में हाजिर अर्थात रा के साथ लिखा है।

(अल् कामिल फ़िल तारीख भाग 2 पृष्ठ 208 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2006 ई.)

(अल् इस्तेयाब भाग 2 पृष्ठ 326 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2010 ई.)

(ओसोदुल गाबा भाग 3 पृष्ठ 73 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2016 ई.)

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने ख़लीफ़ा मुक़र्रर होने के बाद हज़रत तुरीफ़ा बिन हाजिज़ को बनू सुलेम के इन अरबों पर जो इस्लाम पर क़ायम थे वाली बनाया था। ये मुख़लिस और जोशीले कारकुन थे। उन्होंने ऐसी प्रभावी तक़रीरें कीं कि बनू सुलेम के बहुत से अरब उनसे आ मिले।

(हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के सरकारी पत्र पृष्ठ-33)

एक और रिवायत में है। यह रिवायत हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि बनू सलीम की यह हालत थी कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात के बाद उनमें से कुछ मुर्तद हो गए और कुफ़्र की तरफ़ लौट गए और उनके कुछ अफ़राद अपने क़बीले के अमीर माअन बिन हाजिज़ या कुछ के नज़दीक उनके भाई ज़रीफ़ बिन हाजिज़ के साथ इस्लाम पर साबित-क़दम रहे। जब हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु तुलेहा के मुक़ाबले के लिए रवाना हुए तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने माअन को लिखा कि बनू सुलेम में से जो लोग इस्लाम पर साबित-क़दम हैं उनको लेकर हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ जाओ। हज़रत माअन अपनी जगह अपने भाई तुरेफ़ा बिन हाजिज़ को जांनशीन निर्धारित करके हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ निकल पड़े।

(तारीख़ अल् तिब्री भाग 2 पृष्ठ 266 मुद्रित दारुल क़ुतुब इल्मिया लुबनान 2012 ई.)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु से ही एक और रिवायत भी मर्वी है कि बनू सलीम का एक शख़्स हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास आया। उसे फ़ुजाह कहा जाता था। उसका नाम इय्यास बिन अब्दुल्लाह था। फ़ुजाह के शब्द में अचानक का अर्थ पाया जाता है क्योंकि यह शख़्स अचानक मुसाफ़िरों और बस्तियों पर हमला कर के उन्हें लूट लेता था इसलिए उसका नाम फ़ुजाह पड़ गया था। बहरहाल यह हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास आया और उसने कहा कि मैं मुस्लमान हूँ। मैं उन लोगों के ख़िलाफ़ जिहाद करना चाहता हूँ जिन्होंने काफ़िरों में से इर्तिदाद इख़्तियार कर लिया है। आप रज़ियल्लाहु अन्हु मुझे सवारी अता कीजिए और मेरी मदद कीजिए। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसको सवारी दी और असलाह दिया। एक जगह इसकी तफ़सील यूं मिलती है कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उस को दो घोड़े या दूसरी रिवायत के मुताबिक़ तीस ऊंट और तीस सिपाहियों के हथियार दिए और दस मुस्लमान हथियारों से मसला उनके साथ कर दिए। यह शख़्स वहां से चला और जो मुस्लमान या मुर्तद उनके सामने आता उनके अम्वाल छीन लेता और जो इन्कार करता उसे क़तल कर देता। यह हर एक के साथ यही कर रहा था। मुस्लमानों को भी क़तल कर देता था, शहीद कर देता था। इस के हमराह बनू शरीद का एक शख़्स भी था जिसे नजबह बिन अबू मेसा कहा जाता था। एक रिवायत में है कि फ़ुजाह अपने क़बीले की तरफ़ चला और रास्ते में मुर्तद अरबों को अपने साथ मिलाता रहा।

जब उसकी जमईयत बढ़ गई तो उसने पहले अपने मुस्लमान साथियों को क़तल किया और उनका सब माल लूट लिया। फिर उसने ग़ारतगरी शुरू कर दी।

कभी इस क़बीले पर छापा मारता कभी उस क़बीले पर। मुस्लमानों की एक पार्टी मदीना जा रही थी उनको लूट कर मार डाला। पहले लूटा और फिर क़तल कर दिया, शहीद कर दिया। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु को इस की सूचना हुई तो उन्होंने हज़रत तुरेफ़ा बिन हाजिज़ को लिखा या कुछ लोग कहते हैं कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह हुक्म वास्तव में मान को भेजा था। उन्होंने अपने भाई तुरेफ़ा को रवाना किया था। बहरहाल हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने तहरीर फ़रमाया कि दुश्मन-ए-ख़ुदा फ़ुजाह मेरे पास आया और वह कह रहा था कि वह मुस्लमान है। उसने मुझसे मांग की कि मैं उस को इस्लाम से इर्तिदाद इख़तेयार करने वालों के ख़िलाफ़ ताक़त मुहय्या करूँ। इसलिए मैंने उसको सवारी दी और असलाह दिया। अब मुझे यक़ीनी तौर पर यह मालूम हुआ है कि यह अल्लाह का दुश्मन मुस्लमानों और मुर्तद होने वालों के पास गया और उनके अम्वाल लेता रहा और जो उसकी मुख़ालेफ़त करता उसे क़तल कर देता। इस लिए तुम अपने पास मौजूद मुस्लमानों को साथ लेकर जाओ और उसे क़तल कर दो या गिरफ़्तार करके मेरे पास भेज दो। एक रिवायत में है कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत तुरेफ़ा की मदद के लिए हज़रत अब्दुल्लाह बिन केस रज़ियल्लाहु अन्हु को भी रवाना किया। हज़रत तुरेफ़ा बिन हाजिज़ रज़ियल्लाहु अन्हु उसके मुक़ाबले पर गए। जब दोनों गिरोहों की आपस में मुढ भेड़ हुई तो पहले सिर्फ तीरों से मुक़ाबला हुआ। एक तीर नजबह बिन अबू मीसा को लगा जिससे वह हलाक हो गया। फ़ुजाह ने जो मुस्लमानों की शुजाअत और साबित क़दमी देखी तो उसने हज़रत तुरेफ़ा से कहा कि इस काम के तुम मुझसे ज़्यादा हक़दार नहीं हो। तुम भी हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के मुक़र्रर करदा अमीर हो और मैं भी उनका मुक़र्रर करदा अमीर हूँ। बड़ी चालाकी से उसने उनको जंग से रोकने की कोशिश की। हज़रत तुरेफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु ने उस से कहा कि

अगर सच्चे हो तो हथियार रख दो। मुझे तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने तुम्हें पकड़ने के लिए भेजा है।

हथियार रख दो और मेरे साथ हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास चलो। वहीं फ़ैसला हो जाएगा कि तुम अमीर हो कि नहीं। इसलिए फ़ुजाह हज़रत तुरेफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ मदीना रवाना हुआ। जब दोनों हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास आए तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत तुरेफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु को हुक्म दिया कि उसे बक़ीअ में ले जाओ और आग में जला डालो। यह सुलूक इसलिए उस से किया गया कि वह मुस्लमानों के साथ यही सुलूक करता रहा था। हज़रत तुरेफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु उसे वहां ले गए उन्होंने आग जलाई और उस में उसे फेंक दिया। एक रिवायत में आता है कि लड़ाई के दौरान फ़ुजाह भाग गया तो हज़रत तुरेफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसका पीछा करके उस को

क़ैदी बना लिया और अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास भेज दिया। जब वह हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास पहुंचा तो उन्होंने उसके लिए मदीना में एक आग का बड़ा अलाव (जलाने के लिए लकड़ी, फूस आदि एकत्र कर जलाई गई आग) रोशन करवाया और इसके हाथ पांव बांध कर उस में फेंक दिया।

(तारीख़ अल् तिब्री भाग 2 पृष्ठ 266 मुद्रित दारुल क़ुतुब इल्मिया लुबनान 2012 ई.)

(हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के सरकारी पत्र अज़ ख़ुरशीद अहमद फ़ारुक़ पृष्ठ 33-34)

(फ़ुतूहुल बुल्दान लिल बिलआज़री अनुवादक पृष्ठ 152 मुद्रित नफ़ीस अकैडमी कराची)

नौवीं मुहिम जो थी वह हज़रत अला बिन हज़रमी की थी जो मुर्तद बागियों के ख़िलाफ़ मुहिम थी। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक झंडा हज़रत अला बिन हज़रमी को दिया और उनको बेहरीन जाने का हुक्म दिया।

(तारीख़ अल् तिब्री भाग 2 पृष्ठ 257 मुद्रित दारुल क़ुतुब इल्मिया लुबनान 2012 ई.)

बेहरीन यमामा और ख़लीज-ए-फारस के दरमयान वाक़्य था और इस में मौजूदा क़तर और इमारत बेहरीन भी जो जज़ीरा है शामिल थे। यह आजकल का छोटा बेहरीन नहीं बल्कि बड़ा वसीअ इलाक़ा था। इसकी राजधानी दरीना थी। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के समय में यहां मुनज़ीर बिन स्वाह हुक्मरान थे जो हलक़ा बगोश इस्लाम हो गए। इन दिनों बेहरीन या सऊदी अरब को अलअह्सा कहते हैं।

(एटलस सीरतुन्नबी पृष्ठ 68)

हज़रत अला बिन हज़रमी का पिरचय यह है कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु का नाम अला था। आप रज़ियल्लाहु अन्हु के पिता का नाम अब्दुल्लाह था। आपका ताल्लुक़ यमन के इलाक़ा हज़्र मौत से था। दावत-ए-इस्लाम के आग़ाज़ में इस्लाम में शामिल हुए। हज़रत अला बिन हज़रमी एक भाई आमिर बिन हज़रमी मुशरिकों का वह पहला व्यक्ति था जिसको एक मुस्लमान ने क़तल किया था और उस का माल पहला माल था जो पांचवे भाग के रूप में इस्लाम में आया। जंग-ए-बदर के बुनियादी और फ़ौरी अस्बाब में भी यह वर्णन किया जाता है कि एक सबब यह क़तल भी था। हज़रत अला बिन हज़रमी का एक भाई आमिर बिन हज़रमी बदर के दिन बहालत-ए-कुफ़्र मारा गया। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बादशाहों को तब्लीग़ी पत्र इरसाल फ़रमाए तो मंज़र बिन सावा हाकिम-ए-बहरीन के पास ख़त ले जाने की ख़िदमत हज़रत अला बिन हज़रमी के सपुर्द हुई। इसके बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आप रज़ियल्लाहु अन्हु को बेहरीन का आमिल मुक़र्रर फ़र्मा दिया।

हज़रत अला बिन हज़रमी जब उन्हें दावत-ए-इस्लाम दी तो मुन्ज़िर बिन साव ने इस्लाम क़बूल कर लिया। मुनज़ीर को जब इस्लाम का पैग़ाम मिला तो इस का जवाब यह था कि मैंने इस अमर के सिलसिला में ग़ौर-ओ-फ़िक्र किया है जो मेरे हाथ में है तो मैंने देखा कि यह दुनिया के लिए है। आख़िरत के लिए नहीं है अर्थात जो कुछ मेरे पास है यह दुनिया-दारी है। आख़िरत की तो मैंने कोई तैयारी नहीं की और मैं ने जब तुम्हारे दीन के बारे में ग़ौर-ओ-फ़िक्र किया तो उसे दुनिया और आख़िरत दोनों के लिए मुफ़ीद पाया। इसलिए दीन को क़बूल करने से मुझे कोई चीज़ नहीं रोक सकती।

इस्लाम की सच्चाई का मुझे यक़ीन हो गया है। इस दीन में ज़िंदगी की तमन्ना और मौत की राहत है। कहने लगा कि कल मुझे उन लोगों पर ताज्जुब होता था जो उस को क़बूल करते थे और आज उन लोगों पर ताज्जुब होता है जो उस को रद्द करते हैं। तालीम की ख़ूबसूरती का मुझे पता लगा तो अब मेरी तर्जीहात बदल गई हैं। कहने लगा कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की लाई हुई शरीयत की अज़मत का तक़ाज़ा है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का सम्मान किया जाए।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात तक हज़रत अला रज़ियल्लाहु अन्हो बेहरीन के आमिल रहे। बाद में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के अहद-ए-ख़िलाफ़त में भी इसी ओहदे पर क़ायम रहे और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी अपनी ख़िलाफ़त में उन्हें इसी काम पर निर्धारित किए रखा यहां तक कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के दौर-ए-ख़िलाफ़त में उनकी वफ़ात हो गई।

(ओसोदुल गाबा भाग 4 पृष्ठ 71 दारुल क़ुतुब इल्मिया 2016 ई.)

(सेर सहाबा भाग 4 पृष्ठ 397 - 398)

(सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु, अज़ डॉक्टर अली मोहम्मद सलाबी, उर्दू अनुवाद पृष्ठ 339)

तबक़ात इबन-ए-साद के मुताबिक़ एक दफ़ा जब अहल-ए-बहरीन ने हज़रत अला बिन हज़रमी रज़ियल्लाहु अन्हु की रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने शिकायत की तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें स्थगित कर दिया और हज़रत अबान बिन सईद बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु को वाली बना दिया। (तबक़ात इबन-ए-साद भाग 4 पृष्ठ 266 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत1990 ई.)

और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात के बाद जब वहां इर्तिदाद और बग़ावत फैल गई तो हज़रत अबान रज़ियल्लाहु अन्हु मदीना वापिस चले आए और यह ओहदा छोड़ दिया और जब हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन्हें दुबारा बेहरीन भेजना चाहा तो यह कह कर माज़रत कर ली कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद अब किसी का आमिल नहीं बनूँगा। इस पर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फिर हज़रत अला बिन हज़रमी बेहरीन का आमिल बना कर भेजा जिस पर वह अपनी वफ़ात तक क़ायम रहे।

हज़रत अला रज़ियल्लाहु अन्हु की दुआ की स्वीकृति मशहूर थी।

उनके बारे में मुख़्तलिफ़ रिवायात आती हैं। हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो उनकी ख़ूबीयों और क़ुबूलियत-ए-दुआ के बारे में कहा करते थे कि मैं उनसे बड़ा प्रभावित हूँ। रिवायत में बयान करते हैं और बहुत सी बातों के इलावा यह था कि एक मर्तबा मदीना से बेहरीन के इरादे से चले कि रास्ते में पानी ख़त्म हो गया। उन्होंने अल्लाह से दुआ की तो क्या देखा कि रेत के नीचे से एक चशमा फूटा और हम सब सेराब हुए।

फिर हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि मैं अला रज़ियल्लाहु अन्हो के साथ बेहरीन से लश्कर के हमराह बस्रा की जानिब रवाना हुआ। हम लोग लयास में थे कि उनकी वफ़ात हो गई। लयास बनू तमीम के इलाक़े में एक गांव का नाम था। हम ऐसे मुक़ाम पर थे जहां पानी न था। अल्लाह तआला ने हमारे लिए एक बादल का टुकड़ा ज़ाहिर किया जिसने हम पर बारिश बरसाई। हमने उन्हें ग़ुसल दिया और अपनी तलवारों से उनके लिए क़ब्र खोदी। हमने उनके लिए लहद नहीं बनाई थी। तब हम वापिस आए। कुछ अरसा के बाद जब वापिस जा के देखा कि लहद बनाएँ परन्तु उनकी क़ब्र का मुक़ाम नहीं पाया।

(तबक़ात इबन-ए-साद (अनुवादक भाग 4 पृष्ठ 375- 377 मुद्रित नफ़ीस अकैडमी कराची)

(अल् एलाम लिल ज़र्कली भाग 4 पृष्ठ 245 मुद्रित दारुल इलम 2002 ई.)

उनकी वफ़ात के संबंध में भी मतभेद है। कुछ के नज़दीक आप रज़ियल्लाहु अन्हु की वफ़ात 14 हिज्री में और कुछ के नज़दीक 21 हिज्री में हुई थी।

(ओसोदुल गाबा भाग 4 पृष्ठ 71 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)

बेहरीन के हालात के बारे में वर्णन आता है। बेहरीन शाहाने हीरा की अमल-दारी

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 103 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

Tahir Ahmad Zaheer
M.Sc. (Chemistry) B.Ed.
DIRECTOR
طالب دعا
Tahir Ahmad Zaheer
Director oxford N.T.T.College
Jaipur (Rajasthan)
TEACHER TRAINING

OXFORD N.T.T. COLLEGE
(Teacher Training)
(A unit of Oxford Group of Education)
Affialated by A.I.I.C.C.E. New Delhi 110001
0141-2615111- 7357615111
oxfordnttcollege@gmail.com
Add. Fateh Tiba Adarsh Nagar, Jaipur-04
Reg. No. AllCCE-0289/Raj.

में था और शाहाने हीरा, किसरा बादशाहों के अधीन थे। हीरा इस्लाम से पहले शाहाने इराक़ की तख़्तगाह थी। बेहरीन के साहिली और तिजारती शहरों में मिली जुली आबादी थी। फ़ारसी भी थे, ईसाई भी थे, यहूदी भी थे, जाट भी थे और अरब की तिजारत पर फ़ारसियों का ग़लबा था। इन इलाक़ों में ताजिरों की एक जमाअत भी मुक़ीम थी जो भारत और ईरान से आए हुए थे और दरिया-ए-फ़ुरात के दहाने से अदन के साहिली इलाक़े तक के दरमयानी भाग में आबाद हो गए थे। इन व्यापारियों ने यहां के स्थानीय लोगों से शादी ब्याह का सिलसिला भी क़ायम कर लिया था और उनसे जो नसल पैदा हुई थी उसे अबना के नाम से पुकारा जाता था।

(हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हो, मोहम्मद हुसैन हैकल से, उर्दू अनुवाद पृष्ठ 237)

(फ़र्हंग सीरत पृष्ठ 110 ज़व्वार अकैडमी कराची)

साहिली शहरों के पीछे तीन बड़े क़बीले और उनकी बहुत सी शाख़ें आबाद थीं। एक बकर बिन वायल, दूसरा अब्दुल केसावर तीसरा रबीआ। उनके बहुत से ख़ानदान ईसाई थे। घोड़े ऊंट और बकरियां पालना और ख़जूरों के बाग़ लगाना उनका ख़ास पेशा था। इन क़बायल के नाज़िमुल उमूर वे मुक़ामी लीडर हुआ करते थे जिनको हुकूमत-ए-हीरा का एतिमाद हासिल होता था। उनमें एक मुंज़िर बिन सावी था वह बेहरीन के ज़िला हिज्र में रहता था और हिज्र के आस-पास क़बीला अब्दुल-केस पर उस की हुकूमत थी।

(हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के सरकारी ख़ुतूत पृष्ठ 48 नदवा मुसन्नेफ़ीन दिल्ली)

क़बीला अब्दुल केस दो वफ़द रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए। एक वफ़द पाँच हिज्री में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ था जिसमें तेराह या चौदह अफ़राद शामिल थे और क़बीला अब्दुल कैस का दूसरा वफ़द आमुल वफूद यानी नौ हिज्री में दुबारा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ था जिसमें जारूद समेत चालीस अफ़राद शामिल थे। जारूद नसरानी था जो यहां आकर मुस्लमान हो गया।

(एटलस सीरत नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पृष्ठ 438)

एक क़ौल के मुताबिक़ इस वफ़द ने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आने से पूर्व ही इस्लाम क़बूल किया हुआ था।

(जरक़ानी भाग 5 पृष्ठ 141 मुद्रित दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1996 ई.)

हिज्र के फ़ारसियों, ईसाईयों और यहूदीयों ने निहायत नागवारी से जिज़्या देना मंज़ूर कर लिया था। बेहरीन की बाक़ी बस्तियां और शहर ग़ैर मुस्लिम रहे लेकिन ये लोग जब भी अवसर मिलता वक़तन फ़वक़तन बग़ावत करते रहते थे।

(हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के सरकारी ख़ुतूत पृष्ठ 48 नदवतुल मुसन्नेफ़ीन दिल्ली)

(उद्धरित सेर अल् सहाबा भाग 4 पृष्ठ 398)

मुंज़िर बिन सावा के इस्लाम क़बूल करने पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे बदस्तूर बेहरीन का हाकिम मुक़र्रर किए रखा। इस्लाम लाने के बाद उसने अपनी क़ौम को भी दीन-ए-हक़ की दावत देनी शुरू की और जारूद बिन मुअल्ला को दीन की तर्बीयत हासिल करने के लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में रवाना किया। जारूद ने मदीना पहुंच कर इस्लामी तालीमात और अहकाम से वाक़फ़ीयत हासिल की और अपनी क़ौम में वापिस जाकर लोगों को दीन की तब्लीग़ करने और इस्लामी तालीमात से रोशनास कराने का काम शुरू कर दिया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात यानी ग्यारह हिज्री के चंद दिन बाद मुंज़िर का इंतिक़ाल हो गया। इस पर अरब और ग़ैरारब सबने बग़ावत का ऐलान कर दिया। क़बीला अब्दुल कैस ने कहा कि अगर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नबी होते तो वह कभी न मरते और सब मुर्तद हो गए। इस की सूचना हज़रत जारूद रज़ियल्लाहु अन्हो को हुई। हज़रत जारूद रज़ियल्लाहु अन्हो अपनी क़ौम के अशराफ़ में से थे, जो तर्बीयत हासिल करने मदीना गए थे और उनमें से थे जिन्हों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ हिज्रत की और एक अच्छे ख़तीब थे।

(अल् बिदाया वन्हाया भाग 9 पृष्ठ 475-476 मुद्रित दार हिज्र)

हज़रत जारूद रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस बात पर इन सब लोगों को जमा किया जो मुर्तद हो गए थे कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहिवसल्लम की वफ़ात क्यों हुई और तक़रीर करने के लिए खड़े हुए और कहा कि हे अब्दुल कैस के गिरोह मैं तुमसे एक बात पूछता हूँ। अगर तुम उसे जानते हो तो मुझे बता देना और अगर तुम्हें उस का इलम नहीं तो न बताना। उन्होंने कहा जो चाहो सवाल करो। हज़रत जारूद रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा जानते हो कि गुज़शता ज़माने में अल्लाह के नबी दुनिया में आ चुके हैं? लोगों ने कहा हाँ। हज़रत जारूद रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा तुम्हें उनका इलम है या तुमने उनको देखा भी है? उन्होंने कहा कि नहीं, हमने देखा तो नहीं लेकिन हमें उस का सिर्फ इलम है। ये लोगों का जवाब था। हज़रत जारूद रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा फिर उन्हें क्या हुआ? तो लोगों ने कहा कि वे फ़ौत हो गए। तो हज़रत जारूद रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा इसी तरह मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी फ़ौत हो गए जिस तरह वे सब फ़ौत हो गए और मैं ऐलान करता हूँ कि لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ कोई इबादत के लायक़ नहीं सिवाए अल्लाह के और यक़ीनन मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसके बंदे और उस के रसूल हैं।

उनकी क़ौम ने उनकी यह तक़रीर सुनने के बाद, सवाल जवाब के बाद कहा कि हम भी शहादत देते हैं कि सिवाए अल्लाह के कोई हक़ीक़ी माबूद नहीं और बेशक मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसके बंदे और उस के रसूल हैं।

और हम तुमको अपना बर्गुज़ीदा और अपना सरदार तस्लीम करते हैं। इस तरह वे लोग इस्लाम पर साबित-क़दम रहे और इर्तिदाद की वबा उन तक न पहुंची।

(तारीख़ तबरी भाग 2 पृष्ठ 285 मुद्रित दारुल क़ुतुब इल्मिया लुबनान 2012 ई.)

बाक़ी अरब और ग़ैर अरब सबने मदीना का इक़तेदार ख़त्म करने के लिए कमर-ए-हिम्मत बांध ली। ईरानी हुकूमत ने उनकी हौसला-अफ़ज़ाई की और बग़ावत की कमान एक बड़े अरब लीडर को सौंप दी। हज्र में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहिवसल्लम के नुमाइंदे अबनान बिन सईद बिन आस बग़ावत के स्याह बादल उठते देखकर मदीना चले आए।

(हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के सरकारी ख़ुतूत पृष्ठ 49 नदवतुल मुसन्नेफ़ीन दिल्ली)

बनू अब्दुल कैस जबकि बज़ाहिर उनमें से कुछ लोग इस्लाम ले आए थे लेकिन बेहरीन के दूसरे क़बायल हतम बिन ज़ुबैआ के ज़ेरे सरकर्दगी बदस्तूर हालत इर्तेदाद पर क़ायम रहे और उन्होंने बादशाही को दुबारा ऑल-ए-मुज़िर में मुंतक़िल करके मंज़र बिन नोमान को अपना बादशाह बना लिया। एक रिवायत में है कि :

जब उन्होंने मुंज़िर बिन नोमान को बादशाह बनाने का इरादा किया तो उनके सम्मानित सरदारों की जमाअत ईरान के बादशाह किसरा के पास पहुंची। उन्होंने उसके समक्ष हाज़िर होने की इजाज़त चाही। उसने उनको इजाज़त दे दी।

और वे लोग बादशाहों की शान की तरह सहानुभूति का मुज़ाहरा करते हुए उसके सामने हाज़िर हुए। किसरा ने कहा! हे अरब के गिरोह कौन सी बात तुम्हें यहां लाई है? उन्होंने कहा हे बादशाह अरब का वह शख़्स फ़ौत हो गया है जिसको क़ुरैश और मुज़िर के समस्त क़बायल सम्मानित समझते थे। इस से उनकी मुराद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम थे। और फिर कहने लगे कि इस के बाद उनका जांनशीन एक शख़्स खड़ा हुआ है जो कमज़ोर बदन वाला कमजोर राए देने वाला है। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में उन्होंने ये राय दी। और उसके अमाल अपने साथियों की तरफ़ बग़रज़ राहनुमाई वापस चले गए हैं। आज बेहरीन का इलाक़ा उनके हाथ से निकल गया है। सिवाए अब्दुल कैस की छोटी सी जमाअत के कोई भी अब दीने इस्लाम पर क़ायम नहीं है और हमारे नज़दीक उनकी कोई ताकत नहीं है। और हमें उन पर सवारों और प्यादों के लिहाज़ से अक्सरीयत हासिल है। आप किसी आदमी को भेजें जो अगर बेहरीन पर क़बज़ा करना चाहे तो कोई उसे इस से रोक न सके। इस पर किसरा ने उनसे कहा कि तुम किसे पसंद करते हो जिसे मैं तुम्हारे साथ बेहरीन रवाना करूँ? उन्होंने कहा कि जो बादशाह सलामत पसंद करें। किसरा ने कहा कि तुम मंज़र बिन नुमान बिन मंज़र के बारे में क्या कहते हो? उन्होंने कहा हे बादशाह हम उसी को पसंद करते हैं और हम उस के इलावा किसी और को नहीं चाहते। फिर किसरा ने मंज़र बिन नुमान को बुलाया और वह नौजवान था जिसकी अभी ताज़ा-ताज़ा दाढ़ी निकली थी। बादशाह ने उस को ख़िलअत से नवाज़ा और ताज पहनाया और एक सौ घुड़सवार दिए और मज़ीद सात हज़ार प्यादे और सवार दिए। उसे क़बीला बक्र बिन वायल के हमराह बेहरीन जाने का हुक्म दिया और उस के साथ अबु ज़बिया हुतम बिन ज़ैद उसका नाम शुरय बिन ज़ुबैया था यह बनू केस बिन सालबा में से था और हतम उसका लक़ब था उसने इस्लाम क़बूल करने के बाद फिर इर्तेदाद इख़्तेयार कर लिया था और ज़बयान बिन अमर और मुसमे बिन मालिक भी थे।

(किताब रुद्दतुल वाक्दी पृष्ठ 147 से 149 दारुल ग़रब इस्लामी 1990 ई.)

सबसे पहले उन्होंने जारूद रज़ियल्लाहु अन्हो और क़बीला अब्दुल कैस को इस्लाम से पीछे करने की कोशिश की लेकिन नाकाम रहे। इस पर हुतम बिन ज़ुबैआ ने ताक़त के ज़ोर से उन्हें पराजय करना चाहा। उसने कतीफ़ और हिज्र में स्थान पर

ग़ैर मुल्की ताजिरों और उन लोगों को जिन्हों ने उस से क़बल इस्लाम क़बूल नहीं किया था। उन्हें अपने साथ मिला लिया।

(हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु अज़ मुहम्मद हुसैन हैकल पृष्ठ 238-239 इस्लामी कुतुब ख़ाना लाहौर)

अब्दुल कैस क़बीले के लोग अपने सरदार हज़रत जारूद बिन मुआल्ला रज़ियल्लाहु अन्हु के पास चार हज़ार की संख्यां में अपने हलीफ़ों और अपने ग़ुलामों के हमराह इकट्ठे हुए और क़बीला बकर बिन वायल अपने नौ हज़ार ईरानियों और तीन हज़ार अरबों के साथ उनके क़रीब हुए।

फिर फ़रीक़ैन के मध्य शदीद जंग हुई और क़बीला बकर बिन वायल को भारी नुक़्सान उठाना पड़ा। उनमें से और ईरानियों में से बहुत से क़तल हुए। फिर उन्होंने दूसरी मर्तबा शदीद क़िताल किया। इस मर्तबा अब्दुल कैस को भारी नुक़्सान उठाना पड़ा। इसी तरह वह एक दूसरे से इंतेक़ाम लेते रहे और उनके मध्य कई दिनों तक जंग जारी रही यहां तक कि बहुत से लोग क़तल हो गए और अब्दुल कैस क़बीले के अवाम ने बकर बिन वायल से अमन का निवेदन किया। उस वक़्त अब्दुल कैस ने जान लिया कि अब वह बकर बिन वायल के ख़िलाफ़ कोई ताक़त नहीं रखते। इसलिए उन्होंने शिकस्त खाई यहां तक कि वह हिजरत की सरज़मीन में अपने जोवासा नामी क़िला में महसूर हो गए। जोवासा / जोवासा जो है यह भी बेहरीन की वह बस्ती है जहां नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मस्जिद के बाद सबसे पहले जुमा पढ़ा गया था। इसलिए बुख़ारी में एक यह रिवायत है जो हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से मर्वी है वह बयान करते हैंकि إِنَّ أَوَّلَ جُمُعَةٍ جُمِّعَتْ بَعْدَ جُمُعَةٍ فِي مَسْجِدِ رَسُولِ اللهِ فِي مَسْجِدِ عَبْدِ الْقَيْسِ بِجُوَاثَى مِنَ الْبَحْرَيْنِ कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मस्जिद के बाद सबसे पहला जुमा क़बीला अब्दुल कैस की मस्जिद में बेहरीन की बस्ती जोवासा में हुआ था।

बनू बकर बिन वायल ने अपने ईरानी लोगों के साथ पेशक़दमी की और उनके क़िला तक पहुंच गए और उनका मुहासिरा कर लिया और ख़ुराक उनसे रोक ली। बनू बकर बिन किलाब के एक शख़्स अब्दुल्लाह बिन औफ़ अबदी जिस का नाम अब्दुल्लाह बिन हज़फ़ भी आता है उसने इस अवसर पर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु और मदीना वालों को सम्बोधित करते हुए कुछ कविताएँ कहीं जिनमें अपनी बेबसी और बेचारगी और हौसला और सब्र की कैफ़ीयत का इज़हार किया।

أَلَا أَبْلِغْ أَبَابَكْرٍ رَسُولًا
وَفِتْيَانَ الْمَدِينَةِ أَجْمَعِينَا
فَهَلْ لِي فِي شَبَابٍ مِنْكَ أَمْسَوْا
جِيَاعًا فِي جَوَاثَى مُحْصَرِينَا
كَأَنَّ دِمَاءَهُمْ فِي كُلِّ فَجٍّ
شُعَاعُ الشَّمْسِ يَغْشَى النَّاظِرِينَا
تُحَاصِرُهُمْ بَنُو ذُهْلٍ وَعِجْلٍ
وَشَيْبَانَ وَقَيْسٍ ظَالِمِينَا
يَقُودُهُمُ الْغُرُورُ بِغَيْرِ حَقٍّ
لِيَسْتَلِبَ الْعَقَائِلَ وَالْبَنِينَا
فَلَمَّا اشْتَدَّ حَصْرُهُمُ وَطَالَتْ
أَكُفُّهُمُ بِمَا فِيهِ بُلِينَا
تَوَكَّلْنَا عَلَى الرَّحْمٰنِ إِنَّا
وَجَدْنَا الْفَضْلَ لِلْمُتَوَكِّلِينَا
وَقُلْنَا قَدْ رَضِينَا اللهَ رَبًّا
وَبِالْإِسْلَامِ دِينًا قَدْ رَضِينَا
وَقُلْنَا وَالْأُمُورُ لَهَا قَرَارٌ
وَقَدْ سَفِهَتْ حُلُومُ بَنِي أَبِينَا
نُقَاتِلُكُمْ عَلَى الْإِسْلَامِ حَتّٰى
يَكُونُوا أَوْ نَكُونَ الذَّاهِبِينَا
بِكُلِّ مُهَنَّدٍ عَضْبٍ حُسَامٍ
يَقُدُّ الْبِيضَ وَالزُّرْدَ الدِّفِينَا

यह थोड़ी सी लंबी नज़्म है। बहरहाल इसका जो अनुवाद है वह इस तरह है कि हे सुनने वाले अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु और मदीना के सब जवानों को पैग़ाम पहुंचा दे। वे नौजवान जिन्हों ने जोवासा में भूख और मुहासिरे की हालत में शाम की, क्या उनके बारे में मुझे आपकी तरफ़ से मदद मिलेगी? और हर रास्ते में उनके ख़ून ऐसे पड़े हुए हैं कि सूरज के किरनें हैं जो देखने वालों की निगाहों को ख़ीरा कर रही हैं। बनू ज़ोहलावर इजल और शेबाना वर केस क़बायल ने ज़ुलम करते हुए इन सब का मुहासिरा कर लिया है। उनकी क़ियादत ग़ुरूर कर रहा है (ग़ुरूर का असल नाम मुंज़िर बिन नुमान बिन मुनज़र था) ताकि नाहक़ वे हमारी बीवीयां और औलाद छीन ले। जब उनका मुहासरा शिद्दत और तवालत इख़तेयार कर गया तो उन्होंने हम पर ग़लबा पा लिया जिससे हम आज़माईश में डाले गए। हमने रहमान ख़ुदा पर तवक्कुल कर लिया क्योंकि हमने उसका फ़ज़ल तवक्कुल करने वालों को मिलता हुआ देखा है। तो हमने कहा कि हम इस बात पर राज़ी हैं कि अल्लाह हमारा रब है और इस बात पर भी राज़ी हैं कि इस्लाम हमारा दीन है और हमने कहा मुआमलात सँभल ही जाते हैं और हमारे आबा की औलादों की अक़्लें मारी गई हैं। हम इस्लाम पर क़ायम रहते हुए तुमसे जंग करते रहेंगे यहां तक कि या तुम मारे जाओ या हम। हर उस तेज़ हिन्दी तलवार के साथ जंग करेंगे जो तेज़ काट रखने वाली और स्वयं अपने कवच को काटती है।

तो यह पैग़ाम नज़्म की सूरत में "अबदी" ने भिजवाया।

जब हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह शेर पढ़े तो अब्दुल कैस की हालत का इलम होने पर आप रज़ियल्लाहु अन्हु को शदीद ग़म पहुंचा।

आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अला बिन हज़रमी को तलब फ़रमाया और लश्कर की कमान उनके सपुर्द की और दो हज़ार मुहाजेरीन और अंसार के साथ बेहरीन की तरफ़ अब्दुल कैस की मदद के लिए रवानगी का हुक्म दिया।

और हिदायत फ़रमाई कि अरब के क़बायल में से जिस क़बीले के पास से तुम गुज़रो तो उसे बनू बकर बिन वायल से जंग की तरग़ीब दिलाना क्योंकि वह ईरान के बादशाह किसरा के मुक़र्रर करदा मंज़र बिन नुमान विन मंज़र के साथ आए हैं। उन्होंने अर्थात इस बादशाह ने उस के सिर पर ताज रखा है और अल्लाह के नूर को मिटाने का इरादा किया है और अल्लाह के प्यारों का क़तल किया है। अतः तुम لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللهِ अर्थात न गुनाह से बचने की ताक़त है और न नेकी की ताक़त है परन्तु अल्लाह के ज़रीया, पढ़ते हुए रवाना हो जाओ।

(उद्धरित किताब अल् रुद्दतुल लिल कवी पृष्ठ 152-154 दारुल ग़रब इस्लामी 1990 ई.)

(सही बुख़ारी, किताब अल् जुमा बाब जुमा फ़ील कुरा वल मदन हदीस 892)

(तारीख़ अल् तिब्री भाग 2 पृष्ठ 286 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)

हज़रत आल बिन हज़रमी रवाना हो गए। जब वह यमामा के क़रीब से गुज़रे तो हज़रत सुमामा बिन उसाल बनू हनीफ़ की एक जमाअत के साथ उनसे आ मिले। हज़रत उसाल उनसे आ मिले। उनके इलावा केस बन आसिम भी अपने क़बीला बनू तमीम के साथ हज़रत अला बिन हज़रमी रज़ियल्लाहु अन्हु लश्कर में शामिल हो गए। इस से पहले क़ैस बिन आसिम ज़कात देने से इंकार करने वालों में शामिल थे और उन्होंने क़बीला की ज़कात मदीना भेजनी बिल्कुल बंद कर दी थी और ज़कात का जमा शूदा माल लोगों को वापस कर दिया था लेकिन हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु ने जब यमामा में बनु हनीफ़ा को ज़ेर कर लिया तो केस बिन आसिम ने मुस्लमानों के सामने सरे तस्लीम ख़म करने में ही आफ़ियत समझी और अपने क़बीले बनू तमीम से ज़कात इकट्ठी की और हज़रत अला बिन हज़रमी के लश्कर में शामिल हो गए।

(उद्धरित हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हो अज़ मुहम्मद हुसैन हैकल पृष्ठ 239 इस्लामी कुतुब ख़ाना लाहौर)

हज़रत अला रज़ियल्लाहु अन्हो का लश्कर धना के रास्ते बेहरीन की तरफ़ चला। अला रज़ियल्लाहु अन्हो अपने लश्कर को दहना के रास्ते बेहरीन की तरफ़ लेकर चले। दहना यह भी दयार बनू तमीम में बस्रा से मक्का के रास्ते में एक जगह है। वह कहते हैं जब हम उसके मध्य पहुंचे तो उन्होंने हमें पड़ाव का हुक्म दिया। रावी ने कहा कि रात के अंधेरे में ऊंट बेक़ाबू हो कर भाग गए। उनमें से किसी के पास न कोई ऊंट रहा न तोशा न तोशा दान न ख़ेमा। सब का सब ऊंटों पर रेगिस्तान में ग़ायब हो गया

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 07 Thursday 28 July 2022 Issue No.30

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

अर्थात ऊंटों पर लदा हुआ था। ऊंट चले गए तो कुछ भी पास नहीं रहा और यह वाक़िया उस वक़्त हुआ जब लोग सवारियों से उतर चुके थे लेकिन अभी अपना सामान नहीं उतार सके थे। इस वक़्त वह रंज-ओ-ग़म में ग्रस्त हुए। सब अपनी ज़िंदगियों से मायूस हो कर एक दूसरे को वसीयत करने लगे। इतने में हज़रत अला रज़ियल्लाहु अन्हो के मुनादी ने सबको जमा होने का हुक्म दिया। सब उनके पास जमा हुए। हज़रत अला रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा मैं यह क्या परेशानी और इज़्तेराब तुम में देख रहा हूँ और तुम लोग इस क़दर फ़िक्रमंद क्यों हो। लोगों ने कहा यह तो कोई ऐसी बात नहीं है कि जिस पर हमें दोषी क़रार दिया जाए। हमारे ऊंट दौड़ गए हैं। हमारी यह हालत है कि अगर इसी तरह सुबह हो गई तो अभी आफ़ताब अच्छी तरह तलूअ भी नहीं होने पाएगा कि हम सब हलाक हो चुके होंगे। हज़रत अला रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा

हे लोगो डरो नहीं। क्या तुम मुस्लमान नहीं हो? क्या तुम अल्लाह की राह में जिहाद करने नहीं आए? क्या तुम अल्लाह के मददगार नहीं हो? सबने कहा बेशक हम हैं। हज़रत अला रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि तुम्हें ख़ुशख़बरी हो क्योंकि अल्लाह कदापि ऐसे लोगों को जिस हाल में तुम हो कभी नहीं छोड़ेगा।

तलूए फ़ज्र के साथ सुबह की नमाज़ की अज़ान हुई। हज़रत अला रज़ियल्लाहु अन्हो ने नमाज़ पढ़ाई। कुछ लोगों ने तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ी, पानी नहीं था। कुछ का अभी तक पहले का वुज़ू बाक़ी था। जब नमाज़ मुकम्मल हो गई तो हज़रत अला रज़ियल्लाहु अन्हो अपने दोनों घुटनों के बल दुआ के लिए बैठ गए और सब लोग भी इसी तरह दो ज़ानू दुआ के लिए बैठ गए और दर्द के साथ दोनों हाथ उठा कर दुआ में लग गए। लोगों ने भी इसी तरह किया यहां तक कि सूरज तलूअ हो गया। जब सूरज की थोड़ी सी रोशनी पूर्वी उफ़ुक़ में नमूदार हुई तो हज़रत अला सफ़ की तरफ़ मुतवज्जा हुए और उन्होंने कहा कोई है कि जा कर ख़बर लाए कि यह रोशनी क्या है? एक शख़्स इस काम के लिए गया। उसने वापस आकर कहा कि यह रोशनी महिज़ सराब है। जहां रोशनी पड़ी वहां चमक पैदा हो रही थी वह पानी नहीं था बल्कि सराब है। हज़रत अला रज़ियल्लाहु अन्हो फिर दुआ में व्यस्त हो गए। दूसरी मर्तबा फिर वह रोशनी नज़र आई। दरयाफ़त करने पर मालूम हुआ कि सराब है। तीसरी मर्तबा फिर रोशनी नमूदार हुई। इस मर्तबा ख़बर देने वाले ने आकर कहा कि पानी है। हज़रत अला रज़ियल्लाहु अन्हो खड़े हो गए और सब लोग भी खड़े हो गए और पानी के पास पहुंचे सबने पानी पिया और नहाया। वहां कोई चशमा फूट पड़ा था। अभी दिन नहीं चढ़ा था कि लोगों के ऊंट हर सिम्त से दौड़ते हुए उनके पास आते हुए नज़र आए वह उनके पास आकर बैठ गए। हर शख़्स ने अपनी सवारी को पकड़ लिया और उनके सामान में से किसी की कोई चीज़ भी ज़ाए नहीं हुई।

दुआ का यह मोजिज़ा वहां हुआ कि पानी भी अल्लाह तआला ने निकाल दिया। ऊंट भी वापस आ गए लोगों ने उनको भी पानी पिलाया। फिर दूसरी मर्तबा ख़ूब सैर हो कर पानी पिया और उन जानवरों को भी पिलाया और अपने साथ पानी का ज़ख़ीरा भी ले लिया और फिर ख़ूब आराम किया।

मिन्जानिब बिन राशिद कहते हैं कि इस वक़्त हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो मेरे साथ थे। जब हम इस मुक़ाम से ज़रा दूर निकल गए तो उन्होंने मुझसे पूछा कि इस पानी के मुक़ाम से वाक़िफ़ हो? मैंने कहा कि मैं अन्य समस्त अरबों के मुक़ाबले में इस इलाक़े के चप्पे चप्पे से ज़्यादा वाक़िफ़ हूँ। हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि तुम फिर मुझे इस जगह ले चलो। मैंने ऊंट को मोड़ा और ठीक उसी पानी वाले मुक़ाम पर उनको ले आया। वहां आकर देखा कि न कोई पानी का हौज़ है, न पानी का कोई निशान है। मैंने हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो से कहा। खुदा की कसम जबकि यहां मुझे कोई हौज़ नज़र नहीं आ रहा तब भी मैं ज़रूर यही कहूँगा कि यही वह मुक़ाम है जहां से हमने पानी लिया है। परन्तु आज से पहले कभी मैंने इस मुक़ाम पर साफ़ और शीरीं पानी नहीं देखा था। हालाँकि उस वक़्त भी पानी से बर्तन लबरेज़ थे। हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि हे अबू सहम बख़ुदा यही वह मुक़ाम है। इसलिए मैं यहां आया हूँ और तुमको लेकर आया हूँ। मैंने अपने बर्तन पानी से भरे थे और उनको इस हौज़ के किनारे रख दिया था। मैंने कहा कि अगर यह अल्लाह का चमत्कार और अल्लाह की तरफ़ से नाज़िल शूदा रहमत है तो मैं मालूम कर लूँगा और अगर यह केवल बारिश का पानी है तो उसे भी मालूम कर लूँगा। देखने पर मालूम हुआ कि वास्तव में अल्लाह का एक चमत्कार था जो उसने हमें बचाने के लिए ज़ाहिर किया था। इस पर हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो ने अल्लाह की प्रशंसा की। वहां से पलट कर फिर हम अपने रास्ते चले और हिज्र आकर पड़ाव किया।

(तारीख़ अल् तिब्री भाग 2 पृष्ठ 286 से 288 मुद्रित दारुल क़ुतुब इल्मिया लुबनान 2012 ई.)
(फ़र्हंग सीरत पृष्ठ 123 ज़व्वार अकैडमी कराची)

हज़रत अला रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु को एक ख़त लिखा था जो यह है कि इसके बाद अल्लाह तआला ने हमारे लिए दहना की वादी में पानी का एक चशमा जारी कर दिया था। इस वाक़िया के बाद जब हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु को यह ख़बर पहुंची तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह ख़त लिखा हालाँकि वहां चशमा के कोई आसार नहीं थे और सख़्त तकलीफ़ और परेशानी के बाद हमको अपना एक मोजिज़ा दिखाया। हज़रत अला रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु को ख़त लिखा। और परेशानी के बाद हमको अपना एक चमत्कार दिखाया जो हम सब के लिए नसीहत का बायस है और यह इसलिए कि उस की हमद-ओ-सना करें। इसलिए अल्लाह की जनाब मैं दुआ माँगिए और उस के दीन के मददगारों के लिए नुसरत तलब कीजीए। हज़रत अला रज़ियल्लाहु अन्हो पानी मिलने के बाद, वाक़िया होने के बाद हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु को यह रिपोर्ट भिजवा रहे हैं।

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अल्लाह तआला की हमद की। उस से दुआ मांगी और कहा कि अरब हमेशा से दहना की वादी के विषय में यह बात वर्णन करते आए हैं कि हज़रत लुक़्मान से जब इस वादी के लिए पूछा गया कि आया पानी के लिए उसे खोदा जाए या नहीं तो उनहोंने उसे खोदने की मनाही की और कहा कि यहां कभी पानी नहीं निकलेगा तो इस वजह से इस वादी में चशमा का जारी हो जाना अल्लाह की क़ुदरत की एक बहुत बड़ी निशानी है जिसका हाल हमने पहले किसी क़ौम में नहीं सुना था।

(अल् तिब्री भाग 2 पृष्ठ पृष्ठ 290 मुद्रित दारुल क़ुतुब इल्मिया लुबनान 2012 ई.)

तो इस तरह के चमत्कार भी सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ होते थे जो अल्लाह तआला की ख़ातिर मुहिम्मात पर निकलते थे। बहरहाल इसका शेष भाग इंशा-ए-अल्लाह आगे वर्णन होगा।

★ ★ ★

اب دیکھتے ہو کیسا رجوع جہاں ہوا اک مرجع خواص یہی قادیاں ہوا
HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE
(ہمارا عزم صاف ستھرا کاروبار) (SINCE 1964)
क़ादियान में घर, फ्लैट्स और बिल्डिंग उचित कीमत पर निर्माण करवाने के लिए सम्पर्क करें, इसी प्रकार क़ादियान में उचित कीमत पर बने बनाए नए और पुराने घर / फ्लैट्स और ज़मीन ख़रीदने और Renovation के लिए सम्पर्क करें
(PROP: TAHIR AHMAD ASIF)
contact no. : 87279-41071, 83603-14884, 75298-44681
e mail : hussainconstructionsqadian@gmail.com
HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY
थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान
सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (खून, मल,बलग़म इत्यादि) कंप्यूटरराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.
चौधरी खिज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad